MSS No. 151 Subject Technology

Name of MSS वैद्यमनोत्सव Vaidyāmanotsavā

Author नयनसुख

Period - -

Folios 38 (001, 004 to 040)

Script Hindi

Source Prithipal Singh

Missing Folios 002 and 003

वैद्यमनोत्सवं ॥ नयनसुख कृत
[illegible] ४० पत्रक ॥ ल० अ०२२ पं०प्र०५

थ
ड
ल०
का
१६
मल

A. no. 151

मस्रो शिवक हो विचार के कालव
ऋधरिनाम ४७ इतिश्रीपंडित नवे
घकेश वदास पुत्र नयन सुख विर
चिते वैद्यमनोत्सव नाडीपरीक्षा नाम
प्रथमोध्याय: २ अथ ज्वरलक्षण
लिख्यते कि हाविंट गात मूरछा
स्वास कास अतीसार वमन अरु
चि अरु भेदसुत ज्वरोपद्रव दश
परकार ४८ अथ पित्त ज्वर लक्षण
मूर्छा त्रिखा प्रलाप कुनिशिरोपरि
भ्रमचित्त नेत्रदाय कटु लावदनए
लक्षण ज्वर पित्त ४९ अथ कफ ज्व
रलक्षण कास स्वासरोमांच गुरुदे
हरनिद्रा शीत वमन अरुचि मुख
मधुर लाकफ ज्वर लक्षण मी. न ५०
अथ वात ज्वर लक्षण शिर कंठूरो
मांच भ्रमशीत कंप जंभाइ मोह सिथ
लजु कषाइ मुखए ज्वर लक्षण वाइ
५२ अथ अजीर्ण ज्वर लक्षण दो०
वमन वरेचन उदर दुख वकुडि का
र कुपजा सए लक्षण ज्वर को कहे
देस जो रश्म नलाम ५३ अथ...

ज्वरलछण सो॰ दांघ सोष घर लाप
अस्थि पीड शिर वात्रं भ्रम अरुचि ए
लछण मल तापक होस अंगपवि
चारकरि ५४ अथ स्वेद ज्वर लछ
ण निद्रा उंमन फुटि तनन होत
अंगप स्वेद कहो जे वैद्य विचा
र करि स लछण ज्वरस्वेद ५५ अ
थ हृदि ज्वरलछण उंमन बहुत
असत्तो तनन उदरपीड फुन अंगए
ल लछण ज्वर हृदि के कहै स अंथ
प्रसंग ५६ अथ काल ज्वरलछण
सीसताप अरु स्वेद तनन करपद सी
तल होइ ए लछण ज्वरकाल कै नि
सु उपायन हो कोइ ५७ अथ ज्व
र परिपक्क प्रमाण सप्त दिवस अंध
वा रु दश वासर कहि पित्त के कफ
द्वादश दिन आहि जाण हु ज्वरप
रिपक्क सोइ ५८ अथ ज्वर मुक्त
लछण शिर कंडु पारि स्वेद तन न है ही

लघु लाजास मुस्त पाकइ बहु मह
षधि कएल देखा ज्वरनास ५६ अथ
लघु सुदर्शन चूर्ण चौ सोंठ कंडपा
री गुडू कर मूल चके कडा सिंगी कडू क
ष्टर मुह लघीरु लोइ अमल ला सा न
लजुप[illegible]मालो हल दपीपलां ६ ॰ गोल
मिरच कलौंजी आहि जुमान पित्तपा
पापडा पत्र जल ॥ अग्नजर धमां साकु
डामि लाप लोचन बाला मूबी पाप
११ लज्जुपती सरस्वदार हिंठा न मोथ
पटोल ॥ अजमायन ॥ भाग सित्रक ॥ अ
भया पिपला मूल रु औषध मेल कृसम
तूल नैपाली चिरायता जान सम ॥ प्रो
षध ने आधा ॥ भाग इन्ह ॥ प्रो षध का
चूर्ण पी जइ तब्बु ज्वल घाल ॥ आठौ ज्व
र नासै न्का ल दापमोह तंद्रा न रह
इ पांडु रोग कामला जाइ हर लीया ग
द त्रिधा सूल सम जाइ संन्निपात ने
रहि न रह राय भ्रम जो का की रोगन सा
इ स्वास कास की पीडा जाइ गद ॥ प्रने क
नास हि ने जाए हृ मयह हृ किंचत क
है वम्माएह ३॥ अथ बोड्धा गांचू र्ए लो०
सै मा गुड्डूच र मूल मोथा कडू चिरायता

५ देतीत्रिनाकचूरपीपलसोंठपटोल
दल ६४ पीपरमूलगिलोइग्रुमके
ड्याशीपीपरग्नंटकदोइसमसोइतप्नी
रस्योंपीजीये ६५ विषमनिशाज्वरजा
इदूजेतीजेनित्यकोचौथाईज्वरजा
इसोउशांजइस्नुनामकेहि ६६ ग्रथज्व
रांकशदे० सोंठमिरचग्रस्पीपरग्नंट
कूग्नाठपरवान ॐधक विषुपारदक
योदोइदांक एग्प्रान ६७ बीजघत्तूरे
टकवि वपीस ऊ ग्रौषधसोइरसग्रा
दुकस्योंमदीए कर गोलीरत्नीदोइ ६८
जोसीयावेइग्नातउठरसग्राहेकाघा
लेनापपित्तकफवातकोनाश हो
इतत्कालदूजेतीजेनित्यकोचौ
थाईज्वरजाइ तूषाविषाजुग्नीन
ज्वरउदरव्याधिनरहाइ ६९ महा
ज्वरांकश नामधरिग्राइत्तेयकुग्ना
न वैद्यमनोत्सवग्रंथमेभाषाक
हीवषान ७० ग्रथरसमंजरीमता
नमहाज्वरांकश रसविषुग्रंधक
झिकरिटांकरसमलेइ वंनकबीज
त्रयटांकेधरिचित्रकुणदादेशदेइ ७१ ग्रा
५ दुकरसस्योदीजीयेदोइरत्तीसुप्रमान

कैर जंभीरी गंद्रमे लि जा ण उ कै घस
जौन ७२ महं ज्वरां कृशानाम इ सुग
घ ता प नर हो इ हू जो नी जे लिम्ब कोचो
धाई ज्वर ज्वइ ७३ अथ सिद्धि ज्वरा
कुश शंख भस्म हरताल सम ।७ठ टंक
लेउ विचार नीला थोथा दोइ टंक नी
न पुट देउ कुमार ७४ ।औषध संपुट
माह धरि नांकोग जपुट देइ बाहिर
बाहर पाव कध रउ शीतल भये ज्ञले
उ ७५ दोइर त्तीजु प्रमाण गहि बेउ सो
दीजै ज्ञास मान दूध सोंप न्यारे उ है
हिस मै ज्वर नाश ७६ कहो ज्वरां
कशाव कर्म ति पंडि त ले उ विचार
नाहैं रोग ।अनेक बिधि सिद्धि प्रग
ट संसार ७७ ।अथ ज्वरां जी गुटिका
पीपल मन सिल नींब फल रस करे
ला पाइ गोली ।अंजय न पन सुग
ताप त्रिदोष मिट जाइ ।अथ पित्त
ज्वर लक्षण सो० पित्त पापडा ।पान ज
ल सोंपी जै पीट सकै टंक एक परमा
ण दग्ध पित्त ज्वर नाश करे हो ७८
।अथ पित्त ज्वर दग्ध ज्वर लक्षण चौ०
नेत्र बाला मोथा ।पान चंदन पित्तपा

९

पडाढान सुंठ उसीर नीर सौं लेहु दग्ध

पित्त ज्वर नाश करेहु ८० ॥ अथ कफ

ज्वर नाश दोहरा सुंठ मिरच ॥ अरु

कायफल पीपर ताहि मिलाय ना

स जु ली जै नीर सौं कफ ज्वर छिन

माहि जाय ८१ ॥ अथ कफ वाय को चू

र्ण सोरठा सुंठी सौं चरपाइ पीपर मि

रच चिरायता कटु शिवा जु रलाइ चू

र्ण हरै जु वात ज्वर ॥ अथ मल ज्वर

को क्वाथ सोरठा जुंग्धि कु ॥ अरु ॥ अरु कन

धार मोथा कटु हरीतकी क्वाथ पीव

हु तत्काल मल ज्वर कफ को नाश ले

इ ८३ ॥ अथ चूर्ण रस ज्वर को दोहरा

॥ अजमोदा जु हरीतकी सौं चरनाम

हि पाइ पीस पीवै जल न ग्र सौं रस ज्व

र छिन महि जाइ ८४ ॥ अथ भेद ज्वर

को उपाइ मर्द्दन की जै ॥ अंगन कुं तेल ति

ल को पाइ फुन मर्ज्जन जल न ग्र सौं

ठौ गर मघाल चूर्ण आईं ए ८६ कुइ

कुटकि नाप कौं टाल ८६ द वात पित्त प

कौ चूर्ण सोरठा सुंठ चिरायता पित्त पा

प पडा ज्ञान दीजै कटु उ लोइ फुन एम

न पीसहु ॥ श्रान यहै चूर्ण जु वसल ॥ अ

मिजलस्योंग्रावैप्रात ॥ अनलपित्तकफ
दोषघइहोहिसभैज्वरनाश ॥ अथशी
तज्वरकाचूर्ण पीपरसुंठिलोइफ
लिगुग्गनताहिमिलाइ जलस्योंपाजै
टकदोइशीतनापजरहोइ ॥ ८८ ॥ अथघ
िषमज्वरकाचूर्ण पीपरशिलाजु
ग्शामरामिचकसीधोसोइ घृतसा
थैनीरस्योंनाशविषमज्वरहोइ ॥ ८९ ॥
अथश्वासकासविषमज्वरकोका
थ पटुघटीकंदकंटकारीपुष्करमूल
जानिसमतलसोंठगिलोइ ॥ प्रानि
वहुक्वाथजुकीजै जलमिलाइकफ
श्वासकासविषमज्वरजाइ ॥ ९० ॥ अथप
चतुर्थज्वरकोधूली गुग्गलउल्लूपं
षपकुनिशपामवस्त्रमहिमेलधूली
लीजैप्रातउठ ज्वरचतुर्थकोरैल
॥ ९१ ॥ काशस्वासकफकोअवलेह दो०
मघईपीपरपीसकैमधुस्योंचाटहु
प्रानि हिक्काकाशजुस्वासज्वरहो
इरोगकीहानि ॥ ९२ ॥ अथसारंगधर
ज्वरकोंउपाइमिरचसेगनलकी
दलदेइपांचविषमज्वरनाशकरे

७ कै मिरचां गु भेर रस पाइ कफ सं सिमर
न पाप ज्यों जाइ ॥ ९३ ॥ नागराज पद्धति
मतात् लघु लाक्षादि ने लस्म लाभ मजी
ठ हरद सम लेइ तिल का तेल चन गुल
देइ ॥ मैं गुणी कांजी संग पचावइ दाहसी
न विषम ज्वर जावइ ॥ ९४ ॥ अथ संनि
पात को चिकित्सा ॥ आनंद भैरव रस लि
ष्यते ॥ दोहरा ॥ सिंगरफ मिरचां पीपरं
विष टंकण [illegible] ण जु समान ॥ आद्रक रस
सें गोली करइ ऊर तीणक प्रमाण ॥ ९५ ॥
आनंद भैरव रस कह्यो संन्निपात ज्व
र जाइ ॥ वात रोग सो जाग कफ सो हरू
ल जु पराय ॥ ९६ ॥ अथ चिंतामणि रस दो
हरा ॥ गंधक पारद पीपरें मिरचां जीरे
दोइ ॥ पंच लवण त्रय षार विष ॥ अभ्र
क संठि जु सोइ ॥ ९७ ॥ आद्रक रस अरु
पान की सम ॥ औषध घुट दे ह ॥ पर मित
चण क प्रमाण हीं गोली सु मति वंधे ह
॥ ९८ ॥ रस चिंतामणि यह कह्यो कहरैंना
श संन्निपात ॥ आम मवेसी सूल क
फ हैइ विषम ज्वर घात ॥ ९९ ॥ अथ कन
क सुंदरी संन्निपात को दोहरा मिचरं

पीपर संठ विषु गंधक पारद जानि अश्रा
घटं कमित लेइ कनक मूल त्रयटांक
मिलि मर्दन कीजै तीन दिना सम अंगाइ का
इ गुंज सम गोली करु प्रातहि उठि जो
षाइ १०० सन्निपात शीतांग ज्वरहि म
ज्वसब ला जाइ मंदाग्नि उन्माद भ्रम कु
नत्रयदोष नसाइ १ अथ अठार प्र अ
ठार हमूल काथ संन्निपात को घली
या मोथ चिरायते ता कडू इंद्रजव जानि
देवदाहि दशमूल संठि अगज पीपर
आनि २ काथ जु करै पी जीये सं
न्निपात ज्वर जाय तंद्रा मोह प्रलाप
कफ कास स्वास मिट जाय ३ अथ
सन्निपात को अंजन लिष्यते स
रसों सोंधा कूठ मिल स्वेत मिरच सम
भाइ अजा मूत्र सों नाशा देइ तंद्र क
संन्नि मिटाइ ४ अथ संन्निपात को
अंजन दोहरा त्रिकुटा त्रिफला हिं
गु बच सोंधा कडू मिलाइ पीले सर
स्यो सिरस फूल ए औषध सम भाइ
५ अजा मूत्र स्यों पीस कर कर अं
जन नइ नाइ ६ अपस्मार उन्माद के

८ मसन्निपातनइ नाहइ ६ त्रिमरशेगनि
षिं॰अंघपुनिभूतदोषशिरोबल्लि वैघ
जे कहे विचार केए ते करइ निवल्लि
७॰अथसन्निपातको क्वाथ दोहरा मो
थवडु चिरायता कडु गिलोइ मिलाइ
क्वाथ जु करकै पीजीये सन्निपात ज्व
रजाइ ८॰अथसन्निपातको दोहरा कुं
कम लेवेग जु पीवरै ॰अकु करा जु मिला
इ ॰आद्रक रस सौं पीस कै टंक एक जाव
बाइ ९ सन्निपात उन्माद कफ तंद्रा
मारुत कोश सीत सूल भ्रम दाघ ज्व
रइन्ह को कै विनाश १० अथ ॰प्र
तीसार चिकित्सा लीलावटी वैप
इ मिरच मस्त की दाडम कली वंश
लोचन ॰धाब की जुठली लोद मरह
टी माई धाइ मा जूफल मोचरस पाइ
११ कुडा जायफल की कर फूल कछ
बिल॰भाग ॰अबर सम तूल ए सम
॰औषध भाग जु चार पैठे वीजा गि
रीती न धार १२ पोस्त जल सौं गो
ली कीजै टंक एक परमाण धरौ जै
तंदुल जल सौं पीजइ ॰आनि ला

कैगुलि कौस कै न घा नि उदन मठा प
न्यहै ना सु अतीसार सघ हो इ नाश
अघघ कु छि गंगाधार चूरण मोचा
अरलू सुंठि जु धाइ बिल्व पती समो
चरस पाय लोद लजा लू अबे के बीज
कुडा पाठ इंद्रजव लीजे २५ लोध न वा
ला फुलि मधु पाइ तंदुल जल सौं पी उ
मिलाइ मठा भात भोजन ना लेइ अ
तीसार छिन माहि छो भोइ २६ अथ प
लगु गंगाधार चूर्ण सं धा सौं चर हीग
न च पिया पती सर लाइ पीस पीउ ज
ल तन्न सौं अतीसार सो जाइ २७ दोहरा
सुंठ धाल कौ मोचरस अजमोदा सम
भाइ तक्र संग जो पीजीये अतीसा
र मिट जाइ २८ अथ अतीसार कौ ले
प आम्र बीज अनु जामुन फल बिल्व
कप्थ पीस सम घाल जल सौं लेप कु ना
भ पर अतीसार कौ टाल २९ अथ ना
गराज काथ ज्वर अतीसार कौ सोरठा
सुंठ कुडा अतीस मोथा गिलोइ चिरा
यता अतीसार ज्वर जाइ काथ जु
करकै पीजीये ३० अथ घर लौ अतीसा
र कौ काथ चौपई लोध बला कुडा

५

पतीस मोथा बोल जु सम कर पीस याको
क्वाथ जु कर फु मिलाइ पीओ ए तौ ॥ अतीसा
र ज्वर जाइ ॥ अतीसार को गुटिका दोहरा
लोद इंद्रजव मोचरस मोथा बिल्व जु धा
इ तै सम हि ल गुटिका कर फु ॥ अतीसार
थंभ जाइ २२ सोरठा संधा हींगु पतीस व
चसों चर हर है जु सम ॥ अतीसार सभ जा
इ तप्त नीर सों पी जीये २३ ॥ अथ संग्रह
णीरोग लक्षण चि. साधा न पंच कढि क्वाथ
धणी याको या संठि फु नि लोचन बाला
का हु संग बिल्व क थ घालि क्वाथ जु कर के पीजी
ये ॥ आम संग्रहणी हानि २४ संग्रहणीवा
यु शूल को चरण चौपई मोथा सुंठि
जिलोइ पतीस तप्त नीर सों पी जे पीस
आम ग्रहचि संग्रहणी जाइ वायु शूल
छिन माहि मिटाइ २५ ॥ आम ग्रहचि संग्र
णी कों क्वाथ जायफल कंद लोद पाटि ल
जा मोथा बिल्व संठि जु पाव है धणी
या पतीस जि लोय बाला कुडा धाइ मिला
वहो सम पीस ओषधि क्वाथ की जइ प्रा
ति उठ के पी जीये ॥ आम शूल ग्रहचि सं
ग्रहणी नाशाइ न काकी जीये इति श्री
वैद्य मनोत्सव ... संग्रहणी ... अतीसा

रसंग्रहणी रोगग्न ती का र ह्नि तीयो ध्या
यः २ अथ मवेसी रोग चकित्सा चूर्ण
वटिका दोहरा एक मिरच विवसं
ठि सुनि चित्रा ॥ आठ प्रमाण सरण वो
ठ शभाग लेइ चूरण करहु सुजान
२७ कुगुण लेइ मधपाइ के गुटी करहु
कदोइ २८ चूरण मवेसी को ॥ अरलूचि
त्रा इंद्र जव सुंठी सेंधव वेल कर्णि पीजे
तन्क सौं रोग मवेसी [illegible] रेल २९ अब नी
मवेसी को सो ० दूधी मुंडी ॥ आनि घृत ल
वेग सौं पीजीये टांक सात परमाण रक्त
मवेसी नारहै ३० मवेसी को चूर्ण दो०
सूरण वच ॥ अरु मूसली कुठ सुंठि सम
पाइ पीस छाछ सौं पीजीये टांक सात प
रमाण रक्त मवेसी जाइ ३१ मवेसी को
भाफ गुदा को कुडाहल का ॥ प्रानि गो
घृत सौं भाफा की जीइ पुनि विजी
या पाउ उवाल गुदा महि भाफा दीजी
ये दिवस तीन परमाण सवल मवेसी जा
य सव ३२ गुदा धूपणी चूरण जेई वगको
लेइ गुदा महि धूप ॥ दीजीये दिवस सा
त परमाण महि प्रवल मवेसी जायस
व ॥ अथ भगंदर को लेप [illegible] दंती हल्द [illegible]

१० मलैपीसकु नीरमिलाइ लेपकु कीजै
प्राति उठरोग भगंदर जाय अथ लेपर
सकुर रषारा जो लेहि मिरच संगफन
इतना देहि रोग भगंदर जाइ सम ३३ अ
स्थि बिलाइ आनि कै त्रिफला रस सं
जोग तांघसि लाइ एजानि के जाय
भगंदर रोग ३४ सीधी सोंठ जरहरद
फुनि वटबं बेली सुगुलोइ जाइ पत्र
घसि लाई ए नाश भगंदर होइ ३५ अ
थगुल्म रोग प्रतीकार चूर्ण सीधा
सोंचर मेठ हिंग पुनि मे जग अथ लो
ण फुनि जानि अभयापीपर अजमो
दटंक एसमजानमार वेटक समान ३६
इन्हका चूर्ण कु बारिसें जिरस आदु क सों
षाइ गोला सला विसूचिका अरस अ
जीर्ण जाइ ३७ अथ कमोदर कों लोगम
हागाएल आसोरा ति है समान टांक
एक जानिग ली पैना श कमोदर जानि
३८ सकोदर रोग कें उपाइ बा बलसें उं
दधसें गलीनटांक परमाण घनमहिप
डुकी जीये जाएदु बैघस जाए शातस
मे जलन प्रसंजिमो नरयाकै षाइ
रदोत सवही हरइ होइ ३द
पिकाइ

अथ सोथ रोग को लेषु सरसों सोंठ सुहंज
ण बिसषपरासुरदार कं जीसों
जो लेपाये सोथ बिथा जुनिवार ४० सों
ठ हलद समली जीये चूर्ण करडु विचार
जौमद्र सांपीजीये सोथ विथा जुनिवा
र पिपला दिचूर्ण चौपई पीपरपाठाव
कुयरी जानि सोठ जु अभया जीरा आनि
मोथा चित्रा पीपर मूल गजपीपरमेल
हु समतूल ४२ तप्तनीर सों पीजै पीस अ
मवात बदन नहि दीस ऊल अमृ थाफ
लीन रहाय बासी थासी छिन महि जाय
४३ अथेर चूर्ण दो० सोंठ विडंग हरीतकी
देवदार जु मिलाइ तप्तोदक सोंपीजीये
आमवात नरहाय ४४ दाल हलद एरं
डु फुनि तिवी विडंग पत्ती समिरच डंडुन
व आनके लीजे सम करपीस ४५ तप्त
नीर नीसोंपीजीये आमवात ज्वरहा
न कमकी पीडा उदमहि यह लीरें ज्ञ
पराइ ४६ आमवात का चूर्ण सें धा
ति बी विडंग फुनि पीस कुसम कर
जौग तप्तनीर सांपीजीये नासे कमका
रोग ४७ आमवात का चूर्ण गुगल छि
वाकुन बंबाद लनि शायुगले इ थे

११ नुमूत्र चसौं पीजीये नाश शोथोदर होइ ४८
त्रिकुटा त्रिफला निबी व चनिलिका गधूपा
इ घटि इकुडा जु विडंग फुनि चूर्ण करइ मि
लाइ ४९ धेनुमूत्र महि पाइ कै टंक दोइ प
रमाण सप्तदिवस जो पीजीये होइ उदर कु
मरान ५० हिंग्वादि चूर्ण मिरच पीपर सों
ठ हिंग सैंधा जीरे दोइ अजमोदा जल ते
प्र सौं पीवै शूल न होइ ५१ शूल रोग प्रती
कार सौं चरहीगु ञ्जु संठ फुनि वच वकरैं
जे आपाइ आद्र करस सौं जो ली करै ५
२ निषूछी जोइ पर चूर्ण शूल कें पीपर
सोंठ हरीत की सौं चर निबी समान तप्रनी
र सौं पीजीये नाश शूल को जान ५३ अ
तुंबकादि चूर्ण सोरठा इंद्रजव तुंबरपुह
१७ करमूल लवण तीन जवखार हिंगु अ
मयतालमहिं तुल्य जवायण ए [illegible]
[illegible] जु विडंग फुनि ५४ टं
कटंक परमाण ए औषधि सम ली जीये
निर्गी टंक तीन जान चूर्ण इन्ह कौ कीजी
ये ५५ पंटंक तीन परमाण नीर तप्त सौं पी
जीये शूल गुल्म कफ हान आम अका
रा गुल्मगद ५६ शूल रोग कौ चूर्ण दोह
रा सोंठ मिरच अरूपीपर सैंजीक ण मि

लाइ पीसपीवैजल तप्तस्यौं कूलरोग
जुमिटाय ५७ अथ पांडु कामला वाय
रोगप्रतीकार दोहरा त्रिफला कटुकि
रायता वांसा नीमगिलोइ पीजइ का
ढासहित स्यौं नाश पांडुगद होइ ५८ पां
डु कामला कौं त्रिकुटा रजनी आमले
हचलौं पुनिपाइ मधु घृत स्यौं जो नचा
टीए पांडु कामला जाइ अथ कवलवा
य कौं औषधि लोहचूर्ण त्रिफला कटु
निशायुग्म पुनि देइ कवलवाइ सगहो
हरै मधु घृत स्यौं जव लेइ ६० कवलवा
इ कौं पोटली फुलवेदाल का पीसक
रि करि फुपोटली योग नास स्वास स्यौं सं
घीये जाय कामला रोग दूर जौ हरूल दगु
आमले करूं अंजन नैनानि कवलवा
य का नाश होइ मसर पलास जौ घइ अ
पमन रैहै का उपाइ वडीम होली अगुए
इहं डिंगलै वीच ता जे स्यौं वंधि जौं जौं
सू कै रोग नसाइ पनरे है जौ पीतु जाइ
६३ अथ थकाइ कफ कौं अस गंध सूठी
पीपरै सौंगजु मिरी पाइ जोल स्यौं पी
वै पीस कै घई रोग नरहाइ ६४ अथ पागु

रि कुम ग्रई को म नो र मा ग्रं ध्या न्ह रू ल
ग्रं व के लौंग सं गिपी सु ठु ग्रा नि स मा
न गो ली दी जै ग्रा नि ३ ठ हो इ ग्र ई की दु नि
धु प सो र ठा त्रिफला सुं ठि बिडुं ग मिर चा
म घ स जी जु स म वी प र म्ह ल ल वं ग दे
व दा र ल जु ला इ थी ह द्द हो ह रा प प प
त ग्र क्र हा स ना ग जा के म र जा मि ला इ स
म ले दु ली मि स री ग्र ई हो ज भं ग दे ला इ ६ ?
इ नि ग्गो वै घ म नो स व ग्रु र्थी म जों द र
गु ल्म ग्रा म वा न क्र म रू ल पां डु र क
व ल ग्र ई का स स्वा स प्र नी का र [illegible] नी
म ल्ह नी यो धा पः ३ ग्र ष्ण व फु ३ का र ३
बा की से गौं ह प्र नी रः जो ग श ना ल दे
ह रा मा थी बि स ला ग्र र स पी लो ह लो
पा इ ना श ले ह न र ग्रा न ३ ठ फु व डी व फु
र न ग्रा इ द ट फु व की दु ली म नो र मा ग्रं
ध्या ने मिर च लौं ग ग्र मि रु शा शी जि री वे
र वे र क पा इ म धु मिं दी जै पी स कै हि
व की ले ग न स्मा इ ६ ५ ना लो ग्र र कु ठी म
ल मिं प स ले फु लौं ग स मा न पी स क हि
दे फु म धु मिं चा ट फु ३ ठ स का र द्द ३ वा
की पी डा हा ल ७ ० फु व की कों ध्र ली म न

मिलाइ लाइ जु ॥ श्रागण मैं पीसइ समक
र रोग मुखमाहि धरणी लीजौ एनाशउ
वाकौ रोग ७१ छर्दि रोग कौ दोहरा चंद
न मोथा इलाइ ची लाजा कण लवंग
बेर गिरी ॥ प्रकु कमल फल गजकेशर
जु प्रियंग इन्ह का चूर्ण कौ जीये मध
मिश्री जु मिलाइ प्रात समै जब चाटी
ए छर्दि रोग मिटि जाइ ७२ छर्दि कौ ॥ औष
धि सो० लाजा सित ताल बंग कमल बी
ज एलाय ची चाटइ मधु के संग [illegible]
[illegible] छर्दि रोग का नाश होइ ७३ स्वा
स रोग प्रतीकार पद्धडी छंद संठ जु पी
पल कु कडासिंगी पिपलामूल लेकु च
र भडंगी मोथा मिरच समलप्र जल लेइ
स्वास कास का नाश करे इ ७४
॥ अथ स्वास कास का चूर्ण पद्धडी छंद कं
टुवारी पुहकर मूल जानि जे बांसा सौंठि
सु कुलंझन ॥ आनि पीसपीवो उष्ण तप्त नी
र स्वास कास की जाइ पीड ७५ गोली
कांसी कौ दोहरा संठ बहेडा पीपलां के
कडासिंगी आनि भारंगी बांसा एरंड
त्वक एसम पीस ॥ आनि गोली ॥ आद्र

१३ कनीर सौं करो ठंक समदोइ निश्चा जतन
स्वमहि राखी दिनाश बंध को दोइ ७७ जो
लोंधा सी की बांसासौंठ जु पीपर आनि
खचा अनार अजवायन तानि जो ली
की जैसहि तसौं होइ बंध की हानि ७८
कफ को चूर्ण सौंठि जवांसा पीपर चव
क वं दुरौ ही पाइ पीसपी वो जल तनु ९
सौं घांसी धांसी जाइ ७९ वद्धी बंध कों
औषधि विष कौड़ी मिरचौं जु सम
दोइ पंच तीन प्रमाण जो लौं मूंग समा
न करि वट्टी बंध की हानि ८० अथ मं
दाग्नि को औषधि पीपर त्रिबाहरीत
की संठी सें चरपाइ तनु नीर सों पीजीये
मंदाग्नि जु [illegible] पारइ ८१ मंदाग्नि को
चूर्ण पीपर लोद हरीतकी चित्रक सों
ठ समान पीसपीवो जलतन सौं भूख
लगै बहु जोनि ८२ मंदाग्नि कों गुटि
का त्रिकुटा चिपकला जीरा लौंग अ
रु अजवायन सौंइ सम गुड जो ली
कैजीए मंदाग्नि नहि होइ ८३ मंदा
ग्नि कौं [illegible] चूर्ण चौ
पड सेंधा सौंचर वायविडंग त्रिफ

लालितीलवंग चित्राहिंग ॥ अजवाय
ण गाति जीरे दोइ ॥ अनारदाणा आनि
इस ॥ औषधि का चूर्ण करहु तीन पुड़ी
निंबू की धरहु टंक दोइ दिन प्रति जो
खाइ मंदाग्नि की पीड़ा जाइ ८५ ॥ अथ
बिसूचका प्रतीकार दोहरा तेल ति
लों का आन के मर्दन की जै सोइ सिद्धि
योग ने ते कर योनाश बिसूची होइ ९
८६ बंदसंग त्वच बिसूचका वायला
को उपाइ चौं सेंधा कुठ चूक तिलते
ल मधु करहु चूर्ण का मेल करमर्दन
जो की जै लाइ बरी सूल बिसूची जो
इ ८७ इति श्री वैद्य मनोत्सव छठ की
हद्द का सब्बास मंदाग्निरो प्रतीकारना
म चतुर्थो ध्यायः ४ ॥ अथ कुरंड बाय
के प्रतीकार सारंग सरंगधरा तु दो
हरा जीरा सेंधा हिंगलु संग जकर्तु कते
ल सों पकाइ लेपक की जै आनतउठ अं
डवृद्धि सब मिटाइ ८८ अंडु रोगका चू
र्ण त्रिफला चूर्ण टंक द्वै गोमूत्र सं
ग पिवाइ अंड वृद्धि सब मटि हरइ
कफ रोग कफ विसम मजाइ चौपई सर

१४ पंथे की जडु कैं लोहु टंक एघी उसीं
देइ मासए क ओसे वा करै ॥ अंडु वृद्धि
कौं निश्चै हरै ८४ हिं लोपदेशा ल ॥ अं
डु वृद्धि के लेप जी रा एरंडु कुठ संग नेव
हैं वै रमि लाइ कां जी स्यों जौ लेपी ये ॥ अंडु
सो थनर लाइ ५० एरंडु तेल निहार फुनपा
पर घिल संयोग पीइ मका रहि उठ कइ
हरै ॥ अंडु के रोग ५२ ॥ अथ प्रमेव कौं प्रती
कार मह मंदी दारु म कली सेन कथ
समबंडु दिन दश चूर्ण टंक छै ले इ पर
मेव विहंडु ५१ चूर्ण प्रमेव का वडीइ
लाइ ची बंडु सम चूर्ण टंक एक लेइ भो
जन की औप स्य जो कहा कै है प्रमेह ५२
संघा हो लोइ लाइ ची मिला जी न फु नि
लेइ समप्रमेव का दुमह है बंडु सा हिन
जौ लेइ ५३ प्रमेव को रसाभि लोइ का
॥ प्राल कैपी जैसा हि लमि लाइ समप्र
मेव का नाम होइ प्रालस मयो जवधा
इ प्रमेव का जड़ हि का सिला जी नई
संवेध व ध्या नसलधारा जड़ लोइ के
॥ प्रान मधु मिश्री स्यों जड़ हि का खाइ
समप्रमेव की पीड़ा जाइ ५४ प्रमेव

को॰ औषधि सिरसा हो मिरचां २ दालची
नी सि॰ २ जायफल तेलीया सि॰ ४ ७ ८
केसु मि॰ २ सिंबल फुल टं क २ मखुटं
क २ हलद टं क ५ संठि सि॰ ४ मिश्री सि
॰ १२ एसम औषधि मिलाइ कर के गोली
यां करै टं क १ प्रमाण एक गोली प्रातः ३ ८
के खाइ सम प्रमेह की पीडा जाइ ५ १ ७
अथ मूत्र कृछ्र की करे एलाचि का पा
मूत्र कृछ्र पथरी के जोग सताल एला
वां सा को मूल कण्टा रे मुं का पाइ अथ प्रमे
मे द अथ सू हलद मधु का ढा कर ३ मिला
इ सिला जीत अथ सु मिश्री का थ संग इ
हि खाइ मूत्र कृछ्र सम दोष का मिहना
घरी जाइ ५ ५ अथ मूत्र कृछ्र कौ मान्ने
रमा गे पान वांसा हरडे लाइ सी दधि
स्यों दे कु मिलाइ मूत्र कृछ्र समहि हरै
क हो जुपकु समझाइ २०० अथ मूत्र
मूत्र कृछ्र को लाछि केस हाल सिला
तुल्य जब खार घरि जल स्यों पीवै अथ
नि मूत्र कृछ्र सम दोष का नाश होइ
नू जानि १ अथ मूत्र रोधन का प्रती
कार विद्या मूसे की कुल्लनि तंदुल
जल स्यों मेल नाम कले जो लेपी ये मू

[illegible]

भयारोहैतिमिरसकुठकरडकाघनर
जाएमुजीरोगउन्मादकफतापविमुखे
हानि १० वैद्यसंग्रहात् मुगीको उपाइ व
चबुरासपनीसहितसंगटैकदोइ जव ले
इमुगीरोगतवहीहरइ दधिभातपथ्य
देइ ११ अथमुगीकोनसवार मिरचसेंध
उपक्कमाहि घाहि दिवसइकीसप्रमाण ले
इनासमरवीरसोंहोइमुगाकीहानि १२
वैद्यसंग्रहात् ब्राह्मीघृतं दोहरा ब्राह्मी
रसवचकुठसंगसंखाहोलीदेइ औघृ
तमहिइकुसिद्धिकरिमुगीवायहरेइ
१३ अथकुष्टरोगप्रतीकार चौ० त्रिफ
लावांसानिंबपटोलखैरगिलोइकों
समकरलेलचूर्णपीजेजलमहिया
लकुष्टरोगनपैतनकाल १४ कुष्ट
रोगकाचूर्ण गाइनछुंद त्रिफलामि कटु
जीठगिलोइकटुकीनीबनिशाजस
जाएहे वचदारुहलदविडंगवासा
देवदारसुआणहे समपीसचूर्ण
करइविधिसोंपीवपाणीसंगहेकु
ष्टरोगसमस्तबलमाजहिनाशकंद
र्पंगहो १५ अथबलपुमंजिष्ठादिक्वा
थ मारंगधरात् मंजिष्ठात्रिफला

कडू फुनिर जनी नीव गिलोइ देवदार
वच पीस कै छाप जु कीजै सोइ अग्रह
कमंडल पाम दद्रु कंडू कुष्ट न होइ रक्त
विकार सब ही हरै काया निर्म्मल होइ
२६ स्वेत कुष्ट कौं लेप सारंगधर तें के
सर छंद जु आंनी व कुठ वच चित्रा ए
स मपीस कु मेरे मीना प्रात उठ जवपी
जइ पाथर के दोष सगतन नरहा य
कं जी सौं घसि लेपु जु कर ड स्वेत कु
ष्ट निश्चै तन न हरहु २७ स्वेत कुष्ट कौ ले
प वेदसंग्रहात सो० अरणी कालजु
आनि लेप करहु फुनि रगडु कै स्वेत
कुष्ट की हानि सिद्धि योग नइ ए कहौ
२८ स्वेत दाग कौ औषधि वेदसंग्र
हात चौ० बेर आमला सम करले
उ ३ ८ स काढि छाप ब हिदेउ ६ के दो
इ बावची मिलाइ स्वेतदाग मास महि
जाइ २९ कंडू कौ चूर्ण दोहरा हलदवा
वची नीव दल ले ए आमला पाइ ६
क दोइ सो सम अस्थी पीवत कंडू जाइ ३०
कि लोप दे प्रात लेप पांडु का सिंदूर सि
र ब समान करि महिषी घृत संयोग
म थि कै लेपु जु की जीये जावै पांडु का

रोग २२ सारंगधरात लेपविधी बं
बलपातुंका गंधककोचकविडंगपु
निसिंगरफकुठसमान हलदप मा
ठ सिंदूरसों पारहुसमकर आनि रं
कन कबीजतोवकुलरस लेपकुताहि
मिलाइ पाउविवीकादद्रुकुष्ठले
रोगमिटाइ २३ विमचीका ३ पाइ पा
नच्पाककैभस्मकाहमयएसंगमि
लाइ दुखविचीकपनबहरै जोमनन
रलेपकराइ २४ पाउकौंऔषधिम
हिधीघतसिंदूरसोंमिरचोलाहिमि
लाइ मर्दनकी जैतीनदिननिश्चैपा
मभिटाय २५ दद्रुवहिलदरसमपीस
कैलेपहजैलसेजोजपमदद्रुअरु
परसदुख नाशहिएतेरोगपाम
कालेपु सोगधा गंधक हलदकै
लेफनीलायोथ्या नावची सगरीचो
कसोलेहुसमतेदूणापमाठकरि
कडुकतेलमहिपाइ मर्दनकीजै
तीनदिन महिभीजो बरकाइना
सेपाम अनेकविधि २७ पामनि
वाइसो पाकौंऔषधि चौपईका

लीचिरमठीहलदपरमिरचकुठकेसं
गसंहिनिगंधवावरीलेह लोणकको
डेषीजडदेह २८ काइदुजवलोगदनी
वकेपानकालोजीरीकरहिप्रमानने
हमिरचकुनिचुह करमलनीलकं
ठीकोलेउसमनलर २९ लेपनगोम
त्रसंगकरउलहरनिनाइकोयहह
रउसवसोपविसवायपलाइकघो
नइणसरवपहसमजाइ ३० पुपपा
मकोदो॰ मिरचधमोसाहलदकुनि
ए औषधिसमपाइ कटुकतेलसंग
लेपीयेलनदद्दुरवजाइ इतिले
पलनदद का पुषपामको औष
धिदोहरा दवहलदसमपीसके
लेपउजलसंजोगपामदद खुर
थरसदरवनामहिंराते रोग ३१ ले
पलनेकोचौपई चंदनेकुठसंमा
लेपाइकमल ३ सीरकेगोसममाइ
लेपजकीजे जलमहिघोलिल नवि
थासो विथामहिदालि ३२ लनकासि
हि३पाइ नांदलेवीजकोमूगाके
जालपीसडमाइ मेडदध संगलेपी

येलल्हनविष्यानहहोइ अथछीपका
प्रतीकार दो॰ कदलीपातकीभस्म
करितामहिहलदमिलाइलेपजुकी
जैनीरस्योंछीपरोगनरहोइ ३५ छीप
कालेपपवडीकुहहरतोलचंदन
करहानिमलीबीजसहगाअनि जे
भीरीरसस्योंलेपलगाइछीपरोगमिटिजा
हेजाइ ३६ छीपकोंलेप सोरठा गंधक
दनअमलनिंवूरसस्योंलेपीये दिवससा
नपरमाएछीपरोगनतनाशहै ३७ नारवा
रोगप्रतीकार अथ दुग्धकरिसीपकाढ
घिस्योंपीवहुसोइ निजअौषधिनइ
एकहोनासनारवाहोइ दो॰ गंधक
अस्रसोंनकोंदधिसोंपीवैसोइनिज
अौषधपंकतकहोनाशनारवाहोइ
३८ अथसस्त्रघातकोअौषधि काक
जंघाकामूलकुटशस्त्रघातमहिदेइ
पीडारकप्रवाहकीतवहीघाउमिलेइ
इतिश्रीवैद्यमनोत्सवकुरंडप्रेमनन्द
त्रकृतबृमशोधनअसहीअपस्मा
रकुष्टकुंडूपामादद्रुविलहनछीपना
रवाशस्त्रघातप्रतीकारपंचमोध्यायः ५

अथ वायरोग का प्रतीकार पद्धडीछं
द चौपाई असगंधि सुंठि तिल स्याम
जाण सम तुल्य सु मेल हु वेड्डि आण ए
औषधि लीजै घृत मिलाइ सो वात व्या
धि छिन माहि जाइ ४० ऐणि मरवा कि रस
मेहोये का अकर करासु तेज बल लेइ
कायफल माल के डु. ला देइ पीपल सुं
ठि कुठि सम करइ दशादशा टंक पीस के
धरइ चूर्ण अधेला मरिसु खवाइ सोंठ
तेल वडे जो खाइ सुख दिघदिघ लाइ
४१ चूर्ण वातरोग को दोहरा भंग सं
माल भंगरा मेंडी ता हि मिलाइ चूर्ण
दीजइ टंक दोइ वातरोग नर हाइ ४२
गोली वाय की चौपइ पीपर चित्रक
असगंधि आनि चव्य क विडंग अजवा
यण आनि सोंठ कलौंजी पीपरमूल
अकरकरा हविवल सम तुल ४३
ह्लीगडु सोंगोली करइ टंक दोइ प्रमा
ण लसु धरइ प्रातःकाल उठ के गोली खाइ
वाइ चौरासी तेन नर हाइ ४४ अथ
वाम के त्रिपुर भैरव रस टंक चार
सोंठ कों लेहु मिरचा टंक चारि कुन

कुलीनसठ हा गाविछुए कधरकु ग्रादुक
रससो जोली करहु ४५ जोली कंु जो सम
परमाए शीत वायरोग छिनमा हि पला
इक्कसम सिमरत पाप ज्यों जाइ ४६ सारं
गधरा हुबायपीडा कें रागमादि काय दे
हरा सों ठएरंडु ग्रूसरा सना देवदारसु
गु लोइ काढा पीजै प्रात उठ मीडा वायन
सोइ ४७ लघु विसगर्भ तेल मीठा तेल
सेरइक ग्राएन लेधतूरे का रस जा
ए गे जा विछु धतूरे बी डोटा के पां वर
समलो जा ४८ विष सों तेली की जे ग्रा
नि विसगर्भ तेल कुं जानि मर्दन की
जै [illegible] हीलाइ वायरोग चौरासी जाइ
४९ ग्रथ ग्राक डवाइ को ग्रोषधि सो
रठा ग्रूठूकल सए को कूट सीर करै गो
दुग्ध सों वालशीत हड फूट नासे ग्राकड
ग्रेगकें ५० त्रयोदशांग गुगल दो मा लै
कें टु- एती रासना ग्रसगंधि सोंठ गिलोइ लि
बीनवाडे सों पडकुस कचूर टींसना वरसी
इ ५१ ग्रजवायए सम पीस कै सम सम गू
ल पाइ ग्रर्ध सहित जो घी घी उ सरु गोली
करहु मिलाइ ५२ नष्ठ उदकम द दू धसंग
दें बढाइ ग्रव वाइ [illegible] सैगण जौनि

दुखकुवड़ाहुठोडीनुजाहुवाइपड़ेनाडी
१९ जानूपाटकोंनायपिछिहुडसोइमज्जी
संधीपलंगडाजसुनिएतेरोगनहोइग्र
थपिनकेपृतीकारपनडीहेदइलाइचीक
पुरउसीरठोलिगधाम्लाकसचंदनतल्व
ग्पानिएपीसजुपीजैजलेमिलाइसोपि
त्तदग्धछिनमाहिजाइपप ध्रूपाछिग
दग्धव्यथाकालेपदोहरावेरीपल्ल
कग्धामलेलेतदुलजलेपुनिसोइजो
लसोंलेपडुवरणपुजदग्धव्यथानहि
होइपदछंदईडवाकोकरयेदोहरोले
इकुहाराकमलफलसौंगइलाइची
घालिपीससहितसंगदोजीयेछहंद
वाकीटालिपरदग्धपरइकालेपुकों
सपालिमहिनीरसोंसोलागेघतपो
इलेपवरहुपुनिवणपुजदग्धव्यथा
नहिहोइपद ग्रंथकफकोपकेपृती
कारकेशरमिरचांपिपालीमाइजी
फुनिजानमासोमोवालोंगसंजए
समपीसहुग्पानपद पानासोंजाइ
दोजीएपरमिलटकास्वाधकफको
सोग्प्रसूखासज्वरहोइबईकावाध

६० कफ कों चूर्ण लौंग भाडंगी पीपरी
सोंठ कंडारी पाइ पीसपीवो जलनस्र
सों कफ खांसी दुरव जाइ ६१ गंडमाला
प्रतीकार दोहरा पीपल ग्रह कचनार
फल त्रिफल सम कर ग्यान पीसपीवो जल
लनग्र सों नाश ह जो गं जाण ६२ गंडमा
ला को लेप सोंठ भाडंगी पीस के तंडल
जल सं थो ठा कंठ लगावहु मास इक ठह
रइ हू जो हो रोग ६३ सारंग धर ते कच
नार गुग्गल सोरठा पल दश त्वच कच
नार त्रिफल षट् पल लीजीए त्रय प
ल त्रिकुटा धार वरुण इकु पल तोल
घर ६४ कर्ष कर्ष परमाण पत्र जले ल
इलाइची गुग्गल सम भस मग्यानि गुटि
७ का कीजै टंक सोइ ६५ खैरबार पा सों
देइ ग्राघ वा प प्यास नभ्र जल मुंडी क
थ वकरेइ प्रातन्ज पीवे जाए वे ६६ गं
डमाल वृण कुष्ठ ग्रपची जो लाग्रंथि
गुदमोह भगंदर कुष्ठ पवेद नासे सत्य स
न ६७ मुरव रोग प्रतीकार दोहरा नवा सी
र स लाइची मोथा कुष्ठ मिलाइ मुरव म
हि मेल कु पीस कर दिवद नपाक मिट जा
इ ६८ जिस के दांत रसंग्राव न ता हेइ ति

स काउ पाइ रस वांसे का सहित लोंगम
२० धुहुं सुदु रुलोसोइ प्रातलें सहाटे सात
दिन र ॥ अथ वाहपीडा कौ ॥ औषधि दोह
रा वोकाके छाल कपूर सिल कुठ कहू कु
लि जानि लेइ समजीठ सजीसुव हुदी
सहु समकर ॥ पानि ॥ १० ॥ औषधि दस
नेमल कुर ॥ गमन सो थाइ पीडा की
ट कस महरै निमिषवी चलु पलाइ ॥ ११
मुखपाके कौ दोहरा त्रिफला दाख जि
लोइ शतवं वेली दलपाइ दालहल
द ॥ अरु पादु सुनि एली जै सम भाइ ॥ १
२ काढा कौ जै मील कै कुरली करहु
मधु घाल वदन पाक ॥ अरु कगम
नापनासे न कौल ॥ १३ मुखकी लों
कौ ॥ औषधि दोहरा सरसों सीधा लो
द वच ए ॥ औषधि समभाइ जल सौं
वदन ओ लेपी एकौ लरोग न रहाइ
॥ १४ मकोर माठे थान मस्सा की काइ
कौं सो रहना कालो रानि लस्सा मजी
ठा सरसों वीन पुनि पइसों ले पहु जा
ममरत्व धी काई नाहरै ॥ १५ पुनः लेपु
लगाहल रदकुठ लोद मिलिन ॥ औ

बधिसम भाइ नीबूरससौं लेवीरा मु
खकी छाई जाइ ७६ नासिकार क्तगम
नप्रतीकार दूबकसुंभ हरीतकी दाड
म फूलन रलाइ सीतनीरसौं नास देइर
क्तगमन सो जाइ ७७ हितोपदेशा तु
पीनसखे फरस्वासमूल काग्रुटिका मु
ठिमिर च अग्ररूपी पैरेगुसौं दीजै ७ प्रति
पीनसखेहरशीत दुखनाशइन्हका
जाए ७८ नाशापीनसकी मिरचां ग्र
रूबंदाल पक्तनपरमितनिलदोदेइ
नघा लेइनर नीरसौं पीनसरोगहरेइ
७९ नेत्ररोगप्रतीकार जोगशेला तै
रसबन तलेपद हरीतकी जेसह लदमिला
इ जलसौं उपरलेपी एलनइए पीडमि
टजाइ ८० नेत्रपीडाप्रतीकार रगडा
सैंधा ७ कूठ तेल फुनि कांसपा
लमहि सोइ करहिं अंजन रगड़ाकर
फ नेत्रपीड नहि होइ ८१ सुधपकटके
डोर सन तसोइ नाहीपइ स्योंरगडाके
इ कांसपा लमहि रगडाकर फनइए
पीड नवनि क्षै हरै ८२ नेत्ररोगकौं अं
जन कांत्रिक फल अग्ररूजिसफुनिम

हिं दीरससं जोग लोचन अंजन की
२१ जोति रहै न कोई रोग ८३ रात्यो घे कौं
औषधि सावन बहरो बाल कानि ल
इ कु अंजन देइ निशि अंधावहु दिव
श कानि श्रेनाश करेइ ८४ पडुवाल
का अंजन मिर चां जे हू लूल गुड सलें
समकर आनि जल सों लेप हु पार करि
रूपघडवालहिं जानि ८५ अंजन ल
का उकापाशा जिस सुसंग मिसरी मेती
मे गाजानि [illegible]र टांक उलो जोति इ
रू को यही परमाण ८६ उपदंत न अ
रु चाकसू कोही इ[illegible] मिलाइ त्रय
त्रयं कं कसू लौ जोति कों शवाल म
हि पाइ ८७ कै लोपड स्यों रगडु केद्रि
ग अंजन जो करेइ सबल बाउ कानि
शहेइ रुधमान पथ लेइ ८८ पुनः
सबल बाउ कौं रगडा चौपई लोंबा
जिसु मार कै लेहु नीला थोथा रंच
कदेहु फेरा फुम मदुब पकडु कड आनि सी
सों कासी माहि धरहु करि रगडा हैं ग
अंजन करहु सबल बाउ वहइ नक

जाइकछ्योगंघलेइडिं समतृाइ ५०॥ के
टलो नेत्रपीडाकी जीराकौडी हीफटकडि
त्रिफला सोए लेइ रसबांतिमलो हल
दसंगाल्मे ढ़पीस फुलि देइ ५१ औषधि
समग्र्याए कै करडु पोटली पास सर्वपीड़
का नाश होइ नेत्रको निर्मल दोस ५२ ग्रं
जन तिमर को रोवो डका सुरमा सोधा सं
ग फुलि मन हिल त्रिकुटा ॥ ग्रंशालिका लि
कफल समभिसरी फाग रैफेए मिलाइ
५३ ग्रंजन है लीद्धघस्यो तिमर रोग नर
हाइ फोला बोरो वाय फुलि नइ एपीउ
डमिटाइ ५४ नेत्ररोग कौ औषधि क
स्तूरी टं १ सुरमा जंघारी समीरा टं ॥ ग्रधा
भीमसेनी कफूर टं ॥ ग्रधार तनजोत टं
कुंग ममुंड़ी टं ॥ ग्रधा कुंठ का ढ़तपीला टं
का १ मोली स्वेत टं ॥ ग्रधा मजुगा टं ॥ ग्रधा
श्वेत मिरच टं १ कजलो टं १ माभी की वि
ठ टं १ हरड़े टं १ बहेड़े की इट पुराणी टं
॥ ग्रधा निंब की लकड़ी के माहि जिस्तु
का पैसा का लाइ के कांसी की प्याली मा
हिं एसम ॥ ग्रौषधि रगड़े कडुवा तेल
टंक ॥ ग्रधा माहि रलावै लिंग दिन वड़

नरग है फेर नै औ मै पावै ताके गुण सब
लेवा उ औरा बृहस्पति ॥ अथ औषधि ॥ आई ॥ अं
खिफोलाहि ॥ अंखिके सर्व रोग जाते हैं
९५ ॥ अथ कान मनसिल पत्रे रस कान
वीच सौ पाइ बहरा कोडा प बहु दुख एते
रोगन साइ ॥ अथ कानरोग को ॥ औष
धि ॥ आक पात महि सलूण धरि ताप इ
दूणौ सोइ कान वीचर समेली एह बहु
खन हि होइ ९७ कर्णरोग को ॥ औषधि
देवदार वच सौंठ सूनि सैंधा सौंफ मि
लाइ ॥ अजामूत्र सौं लेप करि कान पी
डसु मिटाइ ९८ लेप त्रिदोष शिरोब
नैक कुठ मिरच ॥ अरू काइफल ए
रंडकी जड लेइ तप्त नीरसौं लेपी ताशि
रोबर्ति नहि होइ ९९ लेप ॥ आधा सी
सीके कूठ पीपरी सारला वच मुहले
ठी जानि कौं जीसेती लेप करि ॥ आधा
सीसी हानि ३०० वीपर मिरच हरीत
की एती नौ सम भाइ कौं जीसेती लेप करि
कडा शिर की जाइ १०१ ॥ अथ शिरे का लेप ध
त सौं सीधा पीस के नाश लेह परभात सि
खियोग नैरोक हौ ॥ आधा सीसी जात र २

अथ आधासीसीको ४९ पालक हीनाम अथ
ध शिरेकु जे त्रशिर को घण कोठे वा
सोलं २६ अतीसा बानमे कोठे ४९ उए
बंऊँ का कुमारी कं न्या पासों कलाइनी
ले ताग रविदिने शिर बंधे अथ अधशि
र जाइ उल्लेख अथ सिरेका लेप सो०
अथ जाइपाल बिबु आनि नीला थोथा
निर्बसी लेइ हीर बीजा निघसी एवाल
कम्र तासों ४ लेप कुपढ़ ए लाइ कु बै
चिण गास जल्हा निन्नि उल्लेख अर्ध शि
राजाइ पीडा नासे अंजन की ५ उल्लू कीना
श सोरठा बीज धनं लर आन नाशले ह
नर श्रान उठ होइ उल्ले की हानि शिघियो
गनाइ लेकहो ६ केश बधले को उपाइ
ष्ल तिल ह के गोखरू घृत मधु माहि मि
लाइ केश हि लेप ज्य की जी ए केश बधे
कुधकाइ ७ शिर की करक कों आम कु
कोडे की जड हिं कर समीप दधि ला हि पा
इ सिख मज्जन करउ होइ सकुर कोना
श ८ टटुरी बुस बाय को हस्तीदंत की भ
स्म कर पास हु र स कत सोइ कैली पइसो
लेपी ए घले केश पुनि होइ ९ अथ कल्म

२१ लिख्यते लोमकूर्णं गंधक भंगरा नीलप
थफल तिल गंध आम्र असों लेप करि क
स्पर हइ बहुदिन १० इति श्रीवैद्यमनोत्स
व बालकफ गुल्म नाशि का नेत्र कर्णशि
र रोगप्रतीकार [redacted] नाम षष्ठो ध्याय
इति रोगप्रतीकार चौपाई न. बाधोर गज
केसर लेइ नेत्रबाला चंदन देइ तंदुलज
लसो दहु मिलाइ प्रदर रोग नाशी का जा
इ ११ गज केसर तंदुल मिला दीजै नीर
मिलाइ प्रदर रोग का नाश हो इम सरभा
त अवबाह पुहुप होत की औषधि चौ
पई ब्रसंदडो त्रिकुट सम लेइ तिलकूटे
सों चतुरै देइ गर्भे पुहुप होइ जस नारि
मदया करत हो हित त्यकाल १२ पुहुप हो
ताकी विलेका सोरठा इंतीजाउ जब बार
बीजनै बडो मैनफल धोपर घामहि घा
लपीसहु सैंहु इद्रध स्मै १८ होइ सुपुहुप
लिनाशिवातीकर मलाम हि धरहु कहो
औपधि उपकार सिद्धि योग इहु जानतै
१५ जौनिमुद्धि होत की औषधि दोहरा
सिरसकुंवले आमफले सागरफेन मिला
इ वापाविडंग इलाइची गजकेसर समभा
इ २६ तेलसों गोलीकीजीतांई करनकपर

मासल भगमहि राखा पतन करि षहु औषध
धिहितकाल ७ बेधगा गर्भस्तहो इस्तव
जोनिदो मसभजाहि सालिमलोगावी
रध्रत्त पहुफुनि पच्याकराइ १८ गर्भहो
एकौ औषधि चौपई मिस्चसे दसम
पिप्पलकोकु गजकेसरसवं डाई देइ
गोदू तस्मोजव धीवैनारि ताकौं गर्भ
होहितत्काल १९ गर्भहोए कौ औषध
धि गजकेसर असगंध मालिजलजोरो
चनमिसरी सम पइसों पीवै वंजू होइ
गर्भतत्काल निसु २० धेनुदुग्धसों ले
समएक रैपान जोनारि नासिलेइरति
दिवसमहि होइ गर्भतत्काल २१ बाप
दीगजकेसर असगंधिह लेइके मरदि
रसबीजफुनिदेह जो रोवन सुकंडपा
रीपाइ धेनुदुग्ध अरुचावलखाइ सु
पीसन्मुरवहोइ कमनाइ होइ गर्भसि
मवंधनजाइ २२ कथीस्त्री कौं औषधि
देहरापमाडु अवंगा पीसकै करैले
पुभगमाहि होइ प्रसूततत्काल होउ
दरपीतुसभजाइ २३ पुनः सौ० पहुसें
हंडुकौं पानि लेपकरइनरवनानिहै

करैकष की हानि मिटामहिं होइ प्रसन्न
तिहिं २४ कषीरी को सोरठा जड मंजी
की लेइ कटि बांधे कषी भई तब ही पी
र हरै इ प्रसू त होइ तत्काल ही २५ मर्कं पा
सकोचन कें प्रतीकार पाडु के हैला फू
ट कडीमाई लेटक फर वेरजाडी सुकने
र छि लमाजू फल माहि धरि मदनजे
ह बिच पाइ के करै पुरुष संभोग जोनि
सुगंधिक संकोच होइ रहइ न कोई रो
ग गर्भपाल रहिन ते धाइल जालू क
मलफल मुह लेठी गपूरू पाइ २८ जोनि
संकोचन कों माइं धावै फट कडीमा जू
लोदसमेल वेरजाडी जोपाइ यैसी बन
माइं ठेलिटू २९ त्रिफला ठोट सधालकी
जा भाजि जडुफ निसोइ भगमाहि लेप इस
हित संबद्धि कुमारी होइ ३० शुद्धि संको
चनकों सो० मठाजु गोंका ग्रानिरति
दिन धोवै जोनि निय होइ संकोन जानि
सिद्धि योग नेतेक ह्यौ ३१ जोनी संको
चनकों दो० कसतोजे कफर समजो ली
करमधुपाइ जोनि बीच जो राखी यैची
रोस बनजाइ ३२ जोनि दुर्गंधि हरण

कौ॰ औषधि नीवकानकी क्वाथ करिधो
वैनौ निसतीप अतिदुर्गंधि तानाश
होइ असम होइ वहुपीय ३३ कुचकठन
होणकी औषधि असगंधि महुवाग
जे कण वचे अरणी कुचसोफ लेपन
के जैनीरसांकठनहोइकुचदोइ ३४
पुनः उपाइ जल तंदलेकी आननासि
लेइ रतिदिवसहो कठनहोइ कुचगा
निसनिंयोगनहोए कथो ३५ पाले
लेकी औषधि हलद कुमारिजेतन
करि कुच कुपरसध रेइ पाएहेलाको
नासिहोइ स्त्रियोगजानेहु ३६ वंदस
महान बालकरोगको॰ चौपई कक
डासिंगी कणापतीस बालकचारै मधु
सोंपीस लापकोस अस्क ईनसाइ अ
थवा सहितपतीस जु पाइ ३७ वंदस
महान बालक अतीसारको क्वाथ
सो॰ बालालोदमिलाइ विलवधातुकी
गजकणा मधुस्योकाथपिवाइ अती
सारशिशुकोहरइ ३८ बालककीगुद
पाकी कोरसबमिलाबइ जदापरि अ
सुपाके नोदेइ पाकीजहरणमलीहोइ

सिद्धि योग जानेहु ३९ पुरुषचकित्सा
विजौरा अर्क कनेर जड रस धतूरे पाइ
गोली की जै पीस के ली जै छाम सु काइ
४० पुरषम् असगंधी सब करि करहु लेप
इंद्री पर दीघे कठिन स्थूल होइ देषत मा
नै तीय ४१ लिंगस्थूल की लेइ कुठ वच
पीपरै असगंधि वाला सोइ मधि बीघ
न स्यों लेपी एम् मसल लिंगी होइ ४२ ले
प लिंग वृद्धि स्थूल कौं असगंधि पा
र द गज कणार जैनी सिला मिलाइ ले
प जु की जै लिंग कौं वृद्धि स्थूल कराइ
४३ स्थंभनं अजासे फुंड के दूध महि ल
जालू की जड पाइ कर पद नाभि जु लेपो
ए स्थंभन होइ अधकाइ ४४ लिंग दृढि
कौं शीतल पडे को मिठा अफीम जु जायप
ल वीज घत्र रेसोइ घन स्यों इंद्री लेपु क
रि शीत लिंग दृढ होइ ४५ स्थंभन की
वर्ति का आछो अफीम को आण कै क
रे वर्ति का जोग लिंग छिद्र माहि राखी
ए व हुत वकरै नर भोग ४६ अथ मदन प्र
काश चूर्ण तलमखाण मूसली सौंठ
म बहे सोइ कौं चवीज असगंधि फुनि

सिंवल फलरल्लाइ ४७ वारवरठीलस
तावरिमोचरसलेइलसरै जानिता
नि ४८ अपचकामविला सगुटिका
कुंकमसिंगरफ जापफलतालमषा
एपाइ कौंजवीजलजमस्कीअक
रकरासरल्लाइ ४९ लंवदूइजेवरलौं
गतमालकलअजमायएछरसानि
तीन भागएलीजीपाकफीमपरमाए
५० रसविजीयागुटिकाकरूपरिमि
तठंकजुएक सइनसमइमलनकरै
ललनारमइ अनेक पर धातुवधएकी
न्हे सिंवलकी जडलेइ शुपामसूसली
तासमदेइ दूधबांड स्योंपीयोमिलाइ
धातुपुष्टवलहोइ अधिकाइ परपुनः
उपाइ सोंठसतावरमूसलीलौंगवधा
राजोइ बंडदुग्धस्योंपीवीयेकामपुष्ट व
लहोइ पर अपदुर्गंधतावगलगंधिहू
रगापनी कार चौपई चंदनरजनीमोथ
कचूरलेइ अगरपद्माषकपूर छडमहू
अगजाकेसरपाइपन्हीजडआमलेरल्ला
इ ५४ देहीमर्द्दनकी जैजासहोइदुर्गंधि
नाहिनमहिनास पितदोषसमनासे

जाएग्चर्कंग्रंथनेक ग्रोवमा पपलगल
गंधिकोलेप मोथा विल्वहरीतकीबी
जग्रोलसीपाई लेपकरइनरनोरसों
लगलगंधिसमजाइ ५६ ग्रुटिकासुरव
दुर्गंधिताको विलकछुघणीयाइला
इचीजपनीलज्यपइ गजकेरसर ग्र
रुजाइफलराग्रोषधिसमभाइ ५७ गो
लोकरइ मथीरसोंसइनकरहुमुखघा
लि ग्रानन कीदुर्गंधिता नाशहोइत
त्काल ५८ दुर्गंधिताकोलेप चौपई
गजकेसरपन्हीजइपाइ सिरसपत्र
ग्ररुलोदमिलाइ जलसोंपईनकी जे
ग्रंगदुर्गंधि जाइके पोग्रंथप्रसंग ५९
सिरकीदुर्गंधिताकोलेप चंदनमोथ
चमावतीकालीरासुकचूर जलस्योंपा
वहुसो सममहि होइदुर्गंधिनादूर ६० प
रमिलग्रंथसमुद्रसममममतिथो जोति
पार ग्रोषधिरम्नतिनेग्रहे कीमग्रग
टसंसार ६१ वैद्यमनोत्सवग्रंथमहिक
योसकलनिजग्यान दुरवकंदनफुन
इतिश्रीवैद्यमनोत्सवकेशवदासस

त नैण सुखेण रचितं समाप्तोयं ग्रंथ मम
या लु लेखक पाठकयोः ६० स्वस्ति श्री
गणेशाय नमः अथ दरवेस हकीम लु
तिअथ भाषा प्राण सुखलिख्यते जब
दरवेस हकीम पद्धा ते तब राजा गढ कैल
समए गढ कैलास की औसी गती याँ बो
लें सा च झूठ नहि रत्तीयो १ पंडित वैद्य अ
नेक कवीश्वर मुनिजन साधु महायोगी
श्वर संह सब जन्नी अरू [illegible] सारा गाथा
री इकनाटक लीए अरू पवना हारी २ इकु
लिखता बील च मेंडैं भू नइकु बेरोक रदि
स लामैं लूत इकु हाफ जे कोतवदानस
मंदइ कुनानक बालीप छ तमहंत ३ हम
त्ती उसनरि लो वीरु मालव इ जामत तास्यां
केरी चाल इकु जोलक बासु पछानें मन
की इकु अश्तिबिकरालब हरू जैं तनकी
४ इकु करैं रसायन साधैं धात वहुसा
धन बोलैं आधी बात इकु सुआली अल
शेषक हामैं बहु पत्थर सेती जोकालामैं
५ इकु जु हरी बेलैं जू अ चौपड नरद
अरनर्की हू पा हदो हरा संवत् पोथी
इसका लिख्या गुणीगहीरवारे साह
जहानके ताकमस शवमीर २ जिसे

२१ सरेवहिचारयुगचौदहभवननववंड भू
पतिनरपतिनराधिपति साह जहांवल
मेह एककहूजार ग्रहू पंचसठासनन
वीकापाइ सद्बोंसै ग्रहवासहमांसे वल
विक्रमरण ९ इसकेपाछैवैघकवोलों
करोंसाचकहूछनहीनोलों सुनरे वैघके
बोल तांकुमह हैवो वैघग्रमोल ९ जात
विलवकफलीमेजानो रोगंा कघरएही
मानो देही हैवेइकग्रधारइकनावै
देसमझ्याचार १०. पांचोपित्रग्रहू पां
चो [illegible] चोवाईपांचोकफमन
हिरदैलाई ठौडपित्रकीमघपकवा
सघर [illegible]काग्रामसा ११ दोहरा वा
इकाघरद्वंडरीपोथीलिखयाएहया
पढि वे आपंडितोपाछैग्रौषधिदेह
१२ चौपई सातककलाग्रहसातोधातु
पढ़ केवैघकव जोवात मनहैमीन
ग्रहग्रहग्रगजोचारसिषरे वैघनग्री
वा पहिचानो सातोएहा ग्रघ चिलवि
हन इसकेपाछे चिहनपरीष्या मैसावो
लोंजैसादेष्या १४ पीलाचिहनपित्तकी

लेहमु रव कडु अरु अंतर लेहु सेतावि
हुनक फकाले वइ साथ अरु च अरु
वहु तासो वइ स्याम चिहन थीकऊवा
इमुख अमल अरु अति जंभाई १५
अथ नाडी परीख्या इसके पीछे नाडीचा
लसिषरे वैद्य विचारैं कालमेंडु कचा
लपित्त को गमन वा जो पंडित कऊक
वन गमन परे वा कफ की लेहु शास्त्र
पोथी लिख्या एहु गमन सर्प की जानो
बाई विना चिकित्सा लिख्या न जाई १७
जे धमनी तित्र रगति जातकू सो पंडि
त भई सन्नपात १८ दोहरा जो चिरध
मनी ठौर पर देह न होइ विनाश ठौरे हु
डे पंडित जाहि न रोगी पास १९ अथ
मृत्यु परीख्या पाछे नाडी देखो मृतमह
वैद्य कारी ही मृत सी से भीतर मृतोम
लावो नेत्री देखो फिर देलावो २० पी
लावर्ण जे हो वे मृतके पपित्त काकू
ऊपजत स्याम वर्ण ते कऊ वई रक्तक
मे लेहो भाई २१ सेता वर्ण श्लेषमायो
गसिषुरे वैद्य वचावो रोग एती वातां
सीष के करो चिकित्सा भीत विद्यावा
जो वैद्य कौं देउ नऊ पर भीत रे २२ अथ

समापरीछ्या नातेपाछे समाप छानो दो
दो माहां हतो जानो है मंतच्छेअथव
थोवाइ पित्त श्री अप कडे धाइ हत
वसंतीर त्त विकार वालक व्हे यांदे हीमा
र एतेस्थे जाएक रिनाम चिकित्सा लेहि
२४ धरतीस्र समापछाएक रपा छे औषधि
देह नातेपाछे करेचिकित्सा ना होवे
मेबावडा जुइ सका २५ जो पहिलां रो
गी उपर औसमझोल्ले द्वाएरोगां पा वो
केबे रोगन औषधि दे वो ऐसी सि ह्या
ह मसे लेवो रद्द दशांदिनामे पित्त पकं
दा करे विरेचन दुखकडुंद्ध वारीदिनी
श्लेअप के वमन करावो जे करि सके
२७ सातदिनोमे पके वाइ वहु प ठगर
मछी छुटइ वाइ रक्त विकार का करी
वोरकनेस्तारहु मघी जो कांपछे २८ वा
लक व्हे यादुखे लोग मे एते अहलिर
धात औसेजैसे छोडकरिकरीये चारों
वात २९ अथ ज्वरचिकित्सा जो अ
त्रिपित्त के दुख जला वइ तां ज्वरदे ही
अंतर आवइ दरवे सहकी मव थाने
वात ज्वर है आठ तेरह सन्निपात ३०

विषमज्वरपांचलिखेप्रमानदृजानीजाचै
याजान जवपहिलारोगीदेखोजाइपक
डोनाड़ीसगनमनाइ ३१ पहिलोज्वरमैप्रत
कराबोसाध्यपक्वोदकमलहिपकावो
इसकेपाछेदीजैभेन्यसमऊ असाधांडा
लोरुन्य ३२ पाछेपुडीसदर्शनदीजैवम
नविरेचनलषइकीजे असाध्यलक्षण
जिसरोगीकाबघटैरं चकऊषमहोइ
तिसरोगीकेपंडुतोसिरपरिउष्मरोइ ३३
मुखपोलास्वासउतावलामित्रांमिले
नहेतनतिसरोगीकेवैद्यकोउतारकरीये
बैत्ते ३४ सीतलतलबेव लघटे अरुजी
नोहोइसु अषद तिसरोगीकेपसहंसवै
घजमलेसकेनरब ३५ स्रकीबांसी
होइजिसुनेत्रानींदनहोइ तिसरोगी
केसीसपरिनिशिदिनउठैयारोइ ३६ पं
नरहोइसुदाहज्वर अरुकच्चामलहोइ
वहरोगीघरजमकेभीनरबडकेसोइ ३७
असाध्यालक्षण मलपाकेसोवैसरवी
अरुभोजननलेवेमग तिसरोगीकेवैद्य
रे अंबाधिदेहिनसंग ३८ अथपक्काप
पित्तज्वरकेपद्मामगिलोइहरीउजवा

साइनकेसमकरलीजेबांसा कुटकुवाल
केकरीयेकाथछासोकपडेदे करिहाथ३९
मिठामिश्रीसाथकरेहैमेचरोगीकेपीण
देहो केवलवाय अरुपित्तज्वरतोजा
रूचकूछएतेहरतायंद्रितोदेबोनाराय
ण४० अथवायपित्तकफज्वरकोकाथ
पिपलमूंठीमोथकुटाई इनचहूंकोमेले
भाई टुगएी इनथीलेकुगिलोइअैसाको
थकूतिरिदिनहोइ४१ कफज्वरहोवे
वायज्वरखांसीऔरस्वासएतेहरतायं
द्रितोजांरंचकमाखोपास४२ अथसन्नि
पातके संभकिरायतापुष्करमूलटुग
णमेलोलैदशमूल करोकाथअरुरो
गीदेकुपरुंचकमाव्यौसाथकरेकु४३
इसथीहरताजोणथेकंसीअरुसन्निपात
औरभीहरतावायरोगअरुनमेजपतुस्याघी
ता४४ अथज्वरोंकश्री जेधकपांतटंकण
मिठासमकरमेलोइसकीत्रिकुटा पत्थ्य
रसेतीबरलकरावोरसधनूरावकुता
पावो४५ देदोरतीजोलीकरीयेकामसू
करयेधूपनधरीये किसहूएक किसहूं
देदेहवैदकअंदरसोभालेह४६ इसथी

हरता महा ज्वर विषम ज्वर सन्निपात जैवै
घघुल वे समे परि तो करे रोग की घात ४७
अथ षांसी रोग चकित्सा पांच भात की १
जानो षासी वैद्य सु जनां करी यो हासीपि
पल कू कड़ा सिंगी नसपाल कुट फ काढ़ो
प्रात काल ४८ इस थी षासी सर परि जाइ
अथ अथ चुर षोक न रोगी षाइ अौर फकी
पिप्पल पुष्कर वच भाडुंगी मिरच वहेडा
ककड़ा सिंगी धावे सुंठ अथ अजवायण घी
ता सम करि सम ते मिश्री मीला ४९ कु
ट एक फकी करीये पुडीयां दो रो टां की
मरीये मा ब्यो सेती पुडी चढ़ावो किसहूं
सारी कि सं घटावो ५० इस थी षांसी स
र परि जाइ मामे कफ मामे हूए वाय वा
य षूल कों भी हरै हजा हरै स्वास जावा
सए भीतर मेल के निरणा रोगी षाइ पाथै
र अौषधि षांसी को पिप्पल वंसलोचन
नसपाल दुगुणा इस थी बांसा डाल सं ८
इलाइची मोथा कहुं हारे तनक मेलीये एमी
चारे पर करीये फकी चटाए रोगी मा ब्यो
साथ चटाये रोगी इस थी षांसी हिडकी
पित्त ज्वर अथ मल पित्त एते हरता पंडि

तौ जे रोगी षाटै निन्नै ५३ पुनः गोली षांसी
३० की गंधक सेती तौ का मारो इस थी त्रिकु
ण त्रिफला डारो मा ष्यो सेती पीसो गु
रू तिन तिन रत्ती गोली बनै ५४ दो दो
दी जै कारण रोगी तिन तिन दी जै कार
ण भोगी इस थी षांसी मल की श्लेष्म
और स्वास एते हरता वंड़ि तौ जे कोई रो
गी स्वास ५५ अथ राजरोग चकित्सा सु
नै रे वीरा वैद्य विचक्षन हायी रोग के पां
चो लक्षन ५६ ज्वर सेती षांसी होइ क
रै अरुचि अरु धातु षो इ ५६ दिन दि
न भोजन थोडा भषे हेलक धिर सब हो
च बे सो न्ना लैम र गंक वना वो सम कर
इस के पिप्पलां पा वो ५७ बांधो पुड़ा यां
रत्ती ना ल रेते दी जै साध्य ते बोल इस थी
हरता हयी रोग षांसी और स्वास जे रोजी
भाषे भोजन्न करी दूध अरु मास ५८ अप
अ साध्य लक्षण जे इथी रोग मे वल घटे
अरु पाउं प कडै साध्य तिस रोगी की जा
णिये धरती भीतर लो थ ५९ पुनः औ
षधि पिप्पल वांसा वे शनैन कपूर
दु गुण इन थी लेइ मनूर सम कर सि ३०

लाजीतरलावौ करोइ कठेवरलकरा
वौ ६० मात्रादीजैमाष्मोसेतीइ कौजैसा
वाईपेती इसब्धीहरताहयीरोग अश्मरी
त्रेलछ्छपरमेव औषधिऔरनछल्याइस
ढंडोरुमेसरेव ६२ अथ अथ अतीसारचिकि
त्सा वैद्यैलिखया करिवीचार कैसकारका
हैअतीसार किसहुंपेतीकिसहुंवायकि
सहुंरकफसूंपीजाइ ६३ आदिदुखमैवर
तकरावोपाछेपाचन ३ सेषु लावो पाछे
औषधिकावजनदीजैतौजेगअं रसोभा
लीजै ६४ कुडाजेवांसाधणीमाविल्वदेते
काथनकरीयेदि[illegible] इसब्धीहरतापितदो
खमतिदीजैउपवाइजेदीजैउपरवायके
तोदीजैसोंठरलाइ ६५ भेदनजाणैरोगका
समानकफेपत्थसनरेमर्धं वैद्यतेसंभल
डालीहत्थ ६६ अथ षफकी अतीसारकी धा
वेपोस्तधाणियारालसमकरबंडमिलावो
नाल पीसोपत्थरचीरहणावोचावलधो
इजेलसंजफका वो ६७ इसबीहरता अती
सारक्यापित्तक्यावाय जेभेदपछाणेपत्थ
कातांसंजग्रणीभीजाइ ६८ पुनः अतीसा
रखोफकी जेदीजैमोचरसपोस्तखंड अती
सारकरिहालेहासा ६९ जेदीजैपोस्तखंड

नसपाल्नसही वचावे रोगीका ल एनीनो
दो जै छा छ संगमनिदी जे पालि संग्रा पत्थ
ऊदी जै ड परिनं लेना रोगी मंग ७० अथ
संग्रहणी रोग चिकित्सा वैद्यं लि खवया
कखीचार गुल्म पंच संग्रहणी चार जे
वत्ती मो थां पुष्प अनार सोंठ कत्थ मांड जे
वबार ७१ समकर सम लेषि जीयापा वो
पीसीमा थ्यो साथ चटा वो मात्रा छा छ के
संग्र बलावो ल्ला मो म्र षफिर छा छ पि
लावो ७२ हरना संग्रहणी चार भा नजे को
जो म्रसदेइ जे भेद न जाण्दे न का तं औ
षधि कहा करे इ पुनः अशसव त्रिकुटा त्रि
फला पुष्कर मूल चित्रा चवक अजमाय
णदशा मूल ए औषधी लीजै दो दो तोले
आधे गुड सो घरी ये बोले ७४ मात्रा मेले
कि पकरका सडाले घोडे धावे नाल लाहि
मस मैर घउठा वो पाछे मद्की मांति चु
आवो ७५ निश्रीदिन मात्रा रोगी देह हरे सं
ग्रहणी इ सगुण एह यह हरना थां सी श्वा
स को ज्वरो च क ग्रह व ह श्र लअ और भी
हरना वहुत रोग औषधि का वहमूल ७६
अथ गुल्म चिकित्सा पहिल्यं रोगी जाउ करा
वो पाछे औषधि तिसहिं खुला वो सोंठ हरीडं
पुष्कर वर चसौं चरसजी ची नामिर चा च

वकर्लिंडगाधणाया जीरामन्नो हिंगुसिला
वोवीरा करीयेइसकीफकीझाणादेनेदीजैरो
गपघ्दणाइसथीहरताग्लापांचशव्दमो
हसमजाणीसच्चऔरभीहरतानुदररोग
मंदाग्निग्रहणसूल औषधिदेहिपछाणाके
वैद्यनपडीयोसूल ८० अथकवलवाय
कालखणा कवलवायकेपांचोवैनापीला
मूतअरूपीलोनैना आलसहुनदनिद्वरा
तिजावेदिनदिनघटतोधात ८२ पहिलां
पितांजादुकरावोपाछेऔषधिऔरमंगा
वोवांसाधणीयाहरडउसीरइसकोनिशि
दिनदीजैवीर ८२ इसथीहरताकवलव
इजिसकापीलामूतमतिदीजैउपरवा
यकेसमऊपिलायेमूत ८३ अथछर्दिचिकि
त्सा कहामोहलैहिलैहिरदैमानोपांच
जातकीछर्द्दिपछानो लैमठोहरजलमैपा
वोजवहोइनिपंगुतोरोगीप्यावो ८४ यह
छर्द्दिरोगकाकरतानासजेसंगसेघावेफु
ल्लेवास गिरीवेरकीदुगुणीआनत्रिगु
णीइसथीविलोधान ८५ समकरमिश्री
साथपिसाइसमाचामाघोसायवटाइ यो
इसथीहरनाछर्दिरोगसायउपद्रवजान
एहोऔषधिवजानैदीयोजसोधेकान्ह

८६ अथ हिचकीरोगचिकित्सा अथ
माहांते वुलगारराग्रवसंतर ध्रः अथ चा
ढ छ के जे कोई इस का धः अथ हरना हिच
की ते चमनः अथ जे चिलमैरा ग्र ह का वैमी
तसरपरि हिचकी करै वदीन ८७ पुनः औ
षधि वेषसंभाल कु ८७ वाल थोडी
हिंगु अरु पिप्पल तुल्ल करो क्वाथ अरु
दीजै रोगी इहवकीया औ षधि चर्प्पट पो
गी ८८ इस थी हिचकी सरपर जात भामेज
मला भामे सन्निपात अथ श्वास कास
की चिकित्सा पहिले रोगी वमन करावो
पाछे औषधि तिस हिंगु लावो पिप्पल सं
कंवील छ मह रोगी वर चात गरम सेधुर के सेर मि
चों वर वांधो पुडी यांक पडै छल ए दे ते दीजे
हान पकान इस थी हरना श्वास अरु षां
सी करना मोह मति वह जो हांसी और भी ह
रता वह तेरोग जे करथावे मा थ्या योग
जे करथासी माथ्यो नालपथ्यापत्य की क
रै संभाल ८९ अथ रुमल हरणा रु
मरोगी सुनो कहानी जगतजीवं भा
अधूरसु कावै चाटे ह दातवमूषलाग
वे दंई कंवीला पेट घलावे देत्या छा छ
को संग पिलावे हरता सकल रुमरोग

के॰ यह औषधि परसिद्ध औषधि चंगा क्या
करे जो वैद्य न होवे बुद्ध ९८ पुनः औषधि
वायविडंग पीसा वो निकापा वो घोडी औ
रस न थको माघ्यपासे नीव धोगो लो दोदो टं
के होवे तो ले ९५ जे इ कुइ कु रोगी नित्य खु
लावे कृमरोग की जड़ो कटावे और औष
धि मुरदासंग अरु छाल खनार भी जा
णो कृमकुठार ९६ अथ अर्शरोगचिकित्सा
अर्शरोग का करो बखान कहित मवेसी लो
क अब जान किसहं कन्ते किसहूं न क किसं
हू गदा सु जावे पक किसहूं श्लेष्म किसहं
वाय किसहूं रक्त गुदा थी जा चार चिकित्सा
जाए अनरूप कहूं ए औषधि ले घा पप
पड़ से ता पीया तु न चा ग जे भंग तीने कुछ
होवे ना संग ले ता मक्ष भषा तो उपर मात्र
इस के पा वो जब वकु ताध औइ न थी जाइ
रोगी उपर बैठै आइ अर्शरोग का यह कारण
नाश जो वकु ताध ओम गमे आस कि नी
पा कृमवड़ा पादो तिस सिर और करावा पा
छे रुमी मगमे लावो जब आवे बाहर नि
बे कृ पइ करणा की इह विधि हि ठह सय
जो कोइ जाणेइ सका भेद कृमरोगनाक
लौ बेद १०० पुनः औषधि घोडरुख

३३ कीजमेरुष्यजेकिस्कारहोइ तांनि वारेदु

ष्य पहिलांचावलग्ज्ञोवेघत्तकेरफेइमे

गावोष्ठष्यनमवत्त१०१चीचकपडुके लेसी

मावेमेलो नागेलककवंधावो ग्र्डणइसके

दरवेससुनावेज्योंज्योंसरू केग्रर्शीसकावे

१०२पुनःओषधि जोमसूत्रमहिहरडेपका

वोजवघुघनतवछामसकावो पाछेदु

गुणसरूरणलीजैमेलइकठेटिकाकीजे

जोलीगुडकेसाथवनावोमात्रा छुद्धे से

गवुलावो एहरेकेषमवायकोंमतिदी

जैउपरपित्तउपरपित्तोदीजोयेशीतलऔ

षधिनित्त१०४ग्रथविसूचिकीओष

धि होइग्रपस्थीसमऊनबाहलिसहिं

विसूचीपकडेधाइ लहणयहीविसू

चकवालेजोवैहंवेदोमऊसंभाल्हे१०५

छहेसलोग्रथतीसारहानाहातादेतनिवा

रपहिलांदुखकेवरतकरावोघोडाघो

डानीरदिनावो पाछेजायफलमधस

देहोहरेविसूचकइससुणले१०६

ग्रथषलीरोगकीओषधि जायफल

संठोमेढासिंगीनेलेसतीमलीयेलिंडि

इसधीघरुशीसरपरजाइपरुतनैतने क

रीयेभाइ१०७ग्रथप्रमेवचाकिसाकहे

धन्वंतर लिखयाछानानाकीस भोमग्रमेबंव
याना किसहूं श्लेष्मा किसहूं बाइ किसहूं
धातुपित्तसों जाइ २०८ जिसमूत्र उपर
मखी आवे तिसकों कोई न वै धवचावै
त्रिफलाहलदीमोथ जो बारदुगुणा इन
थी घणीयाडार २०९ माक्योसेती करीये
पोलीहोवे जेतीफल एरंडोली किसहूं थो
डो किसहूं सारी दी जै रोगी करीये कारी २१०
एहरनास कलप्रभेव कोइ समें नाही फेर लि
षणे वाला क्या कहै जो फिर देहूं इअं धेर
२११ अथ उन्माद कीचकिसा लिख्यते उ
न्माद रोग का लक्षण ऐसा रोगी बोले जैसा
कैसा कवहूं रोवे कवहूं गावे कवहूं लेटे क
वहूं कूदे २१२ कवहूं बैठे कवहूं भागे कव
हूं सोवे कवहूं हसे लो कडरावे २१३ फल्तनिका
लवरे चन करीय परु औषधि तेदिन के तेजे
रीये पिप्पल पुष्कर वर वहुहारे लीजे औष
धि सम कर चारे २१४ सोंठ अजमोद घृआस
रणतेल मिलावे करीये नास मात्राले पुरि नि
रफोरषु लावो उन्माद रोग की ज डांकन्या नो २१५
अंजन लेपक रोन सवार इनापंडित जाणत
मकी सार जे जाणे देहो वहूत विकारी तो मं
त्रयंत्र करीये कारी २१६ दरवेस हकीम वबा
ले ऐसा मन... कैसे धाजे सा पढे त्राण

सुखवकोई जोइसो सुतापंडितनमिश्चै होइ॥११७॥
इकुपद्रनाथेरसमऊनाइ कुलिखिना
समवु [illegible] व नालेप[illegible]नमानीये
[illegible]नमीवाचावुद्धाटहोसुलेतीमव
नयुंगासुलेच्चर ऐसेपंडितदेषीयाको
फिरतमैमारा॥११६॥ अथ पमुचक्रपचिकित्सा
जवयुंगदिलेएधानंतरवेतैतवऔषधि
लिखयासुत्रकेकै धीरेवीजेधरणीयाजव
धीरदुखणाइनथीकेसुधर॥१२०॥ मेलइफे
ठेपकीकीजैमात्राकुहिकेसंगहिदीजै
इसथीसरपरजाइदुखानाकहामाहमन
करीयेसुता॥१२१॥ औरभीहरतामुतरोगकं
करीपत्थरीरेत दरवेसहकीमकहाकरै
जोवैघनहोइसचेत॥१२२॥ अथ पथरीरो
गचिकित्सा जिसमाएसकोपथरीहोवै
सुजकांदासरपरोवै मलमलपेठसुतनि
कोकेमुतपरिसुतनमौले॥१२३॥ जोघारसु
होगावकलमी सोरापंथरीकोकरनमोरा
मोरा तीनेनीके वहुतकरालावोपाएी
कुलथीकासंगपिलावो॥१२४॥ पथरीको
यहकरतानासजादिलरोजोवकुतेवा
सजिसघसया हूदीपत्थरपीयाइसरोग
थीमरताजीया॥१२५॥ दरवेसहकीमकु
ढ़िसंभा वेइसथीरहेता चौ[illegible]ी

रनिकालेॱअथअधमानरोगलछणॱअ
धमानरोगकासुनीयोलछणकहतहै
ठोदरवैद्यविचछण बाहरसोॱअथरूॱअं
दरत्रिसनापलपलसूकैॱअधरॱअसरस
नारहदू पाचनदेकरऊडकराईयेपाछेइ
सपंथीऊठापाछेओरपिलाईये जिसपरु
देभीतरजावैपानीनामजलोदरइसका
जानी१२७ छेदोउदरनिकालोनीयाॱओ
षधिइसकाएहोवीरा जोहोइसपो
दरदीजैथोमभाछोसत्तीकरकेमोम
१२८ पाछेसमऊकरपथ्यबुलायेगोबर
गंधकदेहलगाईये१२९ ॱअथपथ्यापथ्या
तकीचिकित्सा दरवेसहकीमलषाने
वातलछणसुनीयोपथ्यापथान गुंगी
रासनावातनॱप्रावेहू जाडंगडीभुजा
सुकावै१३० देनेॱओषधिठिकानकरी
येपरुतीनचारदिनपहलेजरीयेरास्ना
संठेपुख्वरमूलदेवदारॱअजमोदद
शमूलजेकोईइसकाकाढापीवेवाय
रोगपंथीचांगाथोवे१३१ पुनःॱओषधि
जेलसणघीउकतिसाथमिलावैथो
डीसंठीमेलकुटावोवायरोगयहके
रतानासजादिनरोगीबहुतेघासा१३२

रास्ना सुंठी पिप्पलमूल॰ असगंध॰ अज
मायण पुष्करमूल सम करि समान लै गु
गाल लीजै मेलइ कढे निष्के की जै १३३
चहू भीतर मेल कुटावो परु छोड़ा छोड़ू
घोतु मिलावो मात्रा दूधे साथ पिलावो
पाछे भोजन सम करु छुलावो १३४ यह
हरता महावायको॰ आमवात॰ अंगवा
त॰ और भी हरता जाणीये मुखभंग पक्षा
घात १३५॰ अथ वायके तेल सुंठी रास्ना
पिप्पलमूल सोए वांयफल॰ अकं फू
ल दो दो तोला इनकों लीजै मेलइ कढेनि
केकी नै १३६ दशमूल पाणी साथ छए
वो अष्ट्राधा इस थी तेल मिलावो डाल कड
ही सरसप कावो पाणी खपे तां न ले लहा
वो १३७ शीतल होइ तां तिस हिरखा
वो वायरोग मै अंग मलावो दरदवे शाह
कीमन वषाने गैसा मरदवे वे घतां औष
धि कैसा १३८ मुखभंग चिकित्सा जो
पफि लां मुखभंगी परि॰ आवै तां मह
व डे पकाइ पु लावै मांस परे वर पथ्य
नाके निशिदिन दधेणे लै दिष लावो
१३९ बाहर तेलकै मुखपरि लावो
त्रि कुटा जायफल लं निचवा वो के

हिलहकीमसुनोरेपैकुिलकंष्षावैघलो
औषधिषंडित १४० अथ पथ अथ ग्रामवा
तचिकित्सा अथ आउंफूलजवालिंदुरि अथ
वैकरै अरुचूकसंधिदुरवावैपाछेपाच
नएरंडोलीतेलपरद्धधेसेतीकरिदीजै
मेलपाछेलसनषीरषुलावोचूरणमिठा
पकूचढावो १४१ पुनः औषधिवरचक
चूरअजमोदविधाराराम्नासंठादेव
दारुजीराचवक अथ जमायए चीतास
मकरसगलेलीजेमीता १४२ चूरणगु
डकेसाथमिलावोमात्रापाणीसंमषेला
वोइसथीहरता अथ आमरोगसाधउपद्र
वजाएइह अथ औषधिवजमेदईजसोधे
कान्द १४३ अथ घरकरोगचिकित्सा ज
वरकविकारहोवे अथ तिदेहडालेधरम
ररक्तोरेहा सरवानसोचलगावे अथ गीइस
रोगथीसभोकोसंगी १४४ रक्तनिकालवरे
चनकरीयेपरि अथ औषधिथीहिनकेतेजरी
ये तिलांस्यांकुहमिलावेदीजैवसणरोहे
भोजनकीजे १४५ इसथीकुष्ठपुरातनजा
वैजांदिनवहुतेरोगीषावै पुनः औषधि
वांसाषेरविषयानिंवछालचारोनिवेलदद

उवाल जेकोईपीवै इनकाक्काथसरोगज
थीरथैसनाथ १४६ पुनः औषधि लैह
रतालपूहिलांपरलावेउकुट कुदिनइकु
कुहीपावो विसवपराथीहरनाइकुमा
र १४ कुमकोई लिहपमाढ़ १४७ नामीमेलो
बुहैदंडोदशमीमेलोहाथीसडो पाहेटिक्को
मलवनावोध्यपनधरीयेहपसकोवो
१४८ राषढा कोमांडुभरीयेतिसकेमी
तरटिक्कोधरीये चटिमांडेलेपचवढावो
सोलांपहरकी अग्निजालावो १४९ पानो
सायेदीजेसमी लोंगासतीदीजेमोजीक
हामोहलेहिरदेमानोज्ञाइसकेग्रन
गएतवपानो १५० केतेलिखोवषा
णेकेतेग्रंबर तारेदिसएजेते परषो
डेजैसेग्रासलमां लांमनवैदांचंगा
भामा १५१ जेदीजेसतीप्रथमलग्ना
दमबामारनि कालेपडल जेदीजेसत
गिलोइकेसाथ तापोकोफिरलीजैहाथ
१५२ जेदीजैसतीहिंगुहरीडापेटोमारनि
कालेपीडा जेदीजेहरडाजंगीसंगतार
करोगनछेडेअंग १५३ जोकोईपिप्पल
सतीषावेखांसीरोगभीतरतजवावेजे

ह लदीसंगरलाइ मुलावै प्रमेवरोगकीज
डांकटावै १५४ जेकोई षावै सा षडदान
कामदेव के तोडे कंगन दरवेसहकीम
सुनावै कहा गुण इसकेहैं परेपराहार
१५५ अथ अंडीपरोगचकित्सा जिसमाणस
१ कोहोवै कौं मूलवी जो करीये लेपदके
संगपीसलगावोरंचकटं कणसा पर
गडावो १५६ इसथीकौपपुरातन जाव
इ जादिनमलकैरोगीलावइ चंदनसा
थमलैजोहरताइसरोगथीरथैस करता
१५७ अथ पामरोगचकित्सा जिसमाण
सकोहोवैपामपरेषरसती इसकानाम
इसकोंपासनकोइ वेहावैभोजनसाथ
नकेफ़ुलावै १५८ ताइमीरेतेलमंगा
वोमनासिलइसकेमाहिंपकोवो जब
कोडेषंजलथं तरपावोलैलैतेलहपी
थंगमलावो १५९ इसथीपामपुरातन
जावैजादिनदूजेरोगीलावै पुनः अौष
धि तोलागंधककुपारापावकमषए
लेइनियारातीनोडालकडाहीतलीये
तातेपाछे देहीमलीये १६० दरवेशह
कीमशावृसुनावै इसथीपामपुरातन

जावे व्रणरोगचकित्सा जेकच्चा व्रणप
कायालोडेदां तां चावीकणचंवोडे पहष्यो
डाजेसा लूणमिलावोनिश्चिदिनए कु
वार लगावो १६१ जेकोइनि महेडोला
वेए भी कच्चा व्रणपकावे जेचहे पक्का
व्रणकुटायाफोडसमूलीवीज लगाया
१६२ जे वांधो न तोकरहिं कुमारफोडुसे
इसन लाजेवारपट्टी वांधो लैदशमाल
तां भीतरपीपनरहै वाल दरवेशाहको
मस्तुनावै भाउमलूम लाइकुडावै घाउ
१६३ अथ व्रणऽहेरोगचकित्सा जोजा
केवंधपकावैपत्थउसकों वंडीवैदंप
छलदाणकहितां उसथीडेजो करवाउ
नसकैचीरे १६४ मारे चंगापत्थचलावे
सुनसुनवा तां होगीरोकच्चाहोवैतां १६५
कच्चाहोवे तां जोकं लावोपक्के उपरची
रकरावो त्रिफलेपाणनित्पधुलावोया
हे टिक्की नि वंवंधावो १६६ तानेपाछे
मलूमधरीयेपरमलूमसिंगरफकेरी
करीये औषधिमलूम करीयेवहुतार
आजेइसकेके तेकाहितां १६७ सिंगरफ
कपथकवीलाराल घोडामोमामिलावो

नालमल्हमसोके घृतपका वोनी लावो
घाइंच कपावो २६८ उपर बाडा धोइचवे
वोपरु कपडे सेती लेपलगावो फोडाघा
उफिरम्हणी भगंदर ग्रोरनाम्हर इसके
ग्रागे पंदिहो भगल जानो चूर २६९ ग्र
थ अंडवृद्धि चिकित्सा अंडवृद्धिका एहो
सुभाइ किसहूं पेती किसहूं वाइ भीत
रए हु वधावै अंड अंडवधावे घटावे
लांड २७० वंदुक गंद समकर घंडमिला
वोमा ना मा सुएल संगचला वो पाछै सो
हे कडाधरा वोप त्य थपत्य समसमुला
वो २७१ अथ वाजीकरणि वडा कौच दूरं
गएता लमखारा मोचरस म सलीतेस
लयारा इंद्र जव संठ मधा ए म कडा
जवती विजपा वह मस[illegible] एभवए
२७२ मा श्रोसे ले करीये कूए ना मा मदेव
कों करैसंपुर्ण सुघरैदेही मह बलगावे
हुण्णी त्रिगुणी पुसव धावे [illegible] घेसाक ह
रे अति कामकाम व धा न मएइसका
नाम कहित हकौम सुनो हे भाई गुण
इसका स मलि ध्यान जाइ २७४ जवसौ
जायफल लवेग अफीम हर मलसम
लेग्रा धीबेड चलूहे के समेयरहा कर

कैजोगोलीइलीरनार१फालीसाथदेवैवं
३८ धेजवकुतकरे॥१७५ अथनेत्ररोगच
कित्सा॥चाकसूदोतिनतोलेलेहग
इहलेलेडेमजुपकेह जववैहोवेघुघ
ननवछामसुकाबोछिलडलाहधरकंडेत
लावो१७६ अथधीइसथीमिसरील्यावोलै
मिलवैहैवकुतपीसाबोपीडाहोइताअथबो
पावोघडोएकपहैवकुतवधावोपाछेप
हैबोल्हकरिपथ्यअथपथ्यसमऊषुलाला
वो१७७ अथतिमररोगचिकित्सातिमर
रोगकाअंजनएहोलौंगासमकरस्उर
मालेसरंककजीरा१७८ इसथीअंज
नपीसबनावोतिमररोगमैंअखीपावो
जैत्रिफलेगोलीनितहुलावोतिसकेअं
जनअखीपावो१७९ इसथीतिमरपुरा
तननावेजोदिनरोगीवहुतेयावेसि
धीचुरनापीलरसवगदादीहर तालती
नाथोकंकारसाइसथीजाइपउवाल
१८० अथमोतीआविंदकीचिकित्सानै
णलिंगकीसुनीधेवालपाणीनैणपल
टैसाथ चोटीसवलपछानेजोतआती
याविंदुउठावनहोत१८१ जवअंदापाणी ३

जो तजनावे जे से बद दरी दिनपरि ग्रावे से
ताहोवे तां क्रिया की जैनी ला होवे तां ना
मानलीजे १८२ कहा होवे तां ग्रौषधि
लेपलका साघसलाई यांडाले बांधो
पट्टी वा दु बुला वोमाहि ३ कपाडे फेरन
ला वो १८३ ग्रथ फोले की चिकित्सा प
टकडी के सर कूं गरम करी समकरि
मिश्री रंच कसंधी इसको ग्रंजन पो
स ब ना वो मा ग्रा उसके संग पुवा वो १८४
दरवे स हकीम सुनावे भोला इसको जा
यपुरा तन फोला जैसे तो कूचि सुउ ग्रप्रा बो
पावे तां सीतला फोला तुरत कढा वे १८५
जो हो यपुरा तन सी तला फोला उसकें
करी ये राला रोला ग्रथ सबल वाय की
चिकित्सा सबल वाय की सुनो कहानी
रत्न नेत्र ट लग्रावे पानी मनसिल सं
ख केसर सें जिसरी ग्राधी इन की लीजे
मिसरी १८६ जो कोई इसका ग्रंजन पा
वे सबलरोग की जडा कढा वो रपल
का वि लसरी नाह ले कुंडी चाट के
टाघो नारी १८७ ग्रथ रतांधा रोग चिकि
त्सा कहि लजशो धांस नी यो कहूंजि
सकों होवे रातिर तो धा लिखो कले जे क

री योवेरे भुनेपिप्पलपाइसवेरे जवव
३९ दुतानि बसेइस्पीपानी ॥ औषधि इस
काएहेजाणी ॥ १८८ ॥ अथसीसरेगचकि
त्सा ॥ सीसरोगकारूनोविचारदुरवनकप
॥ अथ बोलवरुभार जेरकुचंदनसंगहोवेपी
डा तौरस्कनिकालचवावोवीडा ॥ १८९ ॥ ध
नीयामहिंदीलेपकरावोवोस्नपाणी ॥
सा स्पलगावो जेपिं… केराहेइसिधा
वो तौ शीतल ॥ औषधिमच्छे लावोइस
पीरहे तौ ॥ अवरचलावो जेसीसहो
वे रूपक्षिविकार तौ पिप्पलसंगस्यु
लायो सार ॥ १९० ॥ सुंठिगुरुवारमाथेला
वो परूपहिलौ रोगीवमनकरावो
जेशिरदुरव अंतरहोवे वाइलद
एइसकेसुनीयेभाई ॥ १९१ ॥ जेदिन
रातीहोइ मलेरा एहो लक्षण वाद
सकेदासुंठीएरंडदोजडुमाजकेसर
रं चवकसाथमिलावो केसर ॥ १९२ ॥ इन
का माथेलेपचढावोपरू जोकेसर
संगवहिलावो लेन सवार मोलिंद
मिस्सबदी ॥ अंवा हडु गपेड़ि

जाइ कधी गंध लेइ हु समझाइ ५०
पोटली नेत्रपीडा की औरा की त्रि
फट कडी त्रिफला सो ए लेइ रस ब
तिहा ल्यो हलद संग लोद की मफु
लि देइ ५१ ए औषधि समझाए के
कर हु पोट ली[illegible] म सर्व पीड का ना
श होइ बइ ऐ निर्मल [illegible]
जन तिमर खो रै वाउ का [illegible]
म बल बाउ खो रा बा ह[illegible] श्र
ई ये खि फोला हि ग्रं[illegible] राग
ज[illegible] है ५५ ग्रा कल[illegible] ग
रस कान वीच से पाइ [illegible] हरा कीडा द
बडु रव ए ते रोग नसाइ ५६ ग्रथ कान
रोग की औषधि आक पात समहि
सलए धृति ताप कु हत्ले सेइ कान
बीच रस मेली एए बडु रव नहि हो
इ ५७ कर्ण रोग की औषधि देव दा
रु वच सोंठ सु नि सेंधा सौंफ मिलो
इ ग्रथ जामू त्रासौं तष्ठ कर कान पी
डु सु मिटाइ ५८ लेप त्रिदोष शिरो
बली का कुठ मिरच ग्रलु काइफल ए
रेंड की जड लेइ लप्त नीर सौं लेप शि

[illegible] सरी श्रा [illegible]

गलो [illegible]

सीये [illegible]

२९ [illegible] डोगगीमतदे, सिलसीपीसकैकची

लसीपुडीमसेघाइघोडसाव [illegible] बिघाके

[illegible] जवारसखत्तउलाकी [illegible] वीपलसि [illegible]

[illegible] वड [illegible]

[illegible] जीहतोलेचार [illegible]

[illegible] दासाटा

[illegible] तोसे चार [illegible] नारे

[illegible] चार [illegible] कडा लेपेर

[illegible] गाकोनस [illegible]

वोलाशा

चीरहेलांगे [illegible]

[illegible] फक्रिविनेदोर

[illegible] योसार [illegible] दुधमे

[illegible]

[illegible] कलीवि [illegible] विकरे [illegible]

[illegible] नसवारवीजडुलडुलंदवावीलुहसराम

[illegible] चावलो [illegible] दाना [illegible] सकनककोपावलेके

[illegible] समजववाय [illegible] विदेश

[illegible] लैकेसेगवेजै [illegible]

[illegible] सानवे [illegible] विलायहूदके [illegible]

नपकोके [illegible] सवा [illegible] गले

[illegible] ठवरा [illegible] रासको [illegible]

पेलावे [illegible] सवार [illegible] ववि [illegible] वाव

[illegible] वसही [illegible] सरी [illegible]

نیادن [illegible]

/ ۔۔

وخوزه

/

دیگر

عصه

ردکھن پرند

/ ۔

کاردهلی دروغ [illegible]

۲۶ / تا ۲۸ / [illegible]

/ ۔۔

تیر

/ ۔۔

رکاب کاپیا

/ ۔

کاردهلی دروغ [illegible]

/ ۔۔

نیادن

/ ۔۔

وخوزه

۲۹ / تا ۳۰ / [illegible] ۱۹

/ ۔۔

تیر

/ ۔۔

وخوزه

/ ۸

[illegible] دهلی [illegible]

[illegible]

عصه

[illegible] جلسه [illegible]

[illegible]

/ [illegible]

[illegible]

/ [illegible]

[illegible]

/ [illegible]